शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 4 अंक 14 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 अप्रैल 2020

मुख्य संपादक

डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक

प्रो.सती.के

डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा

श्रीमती वनजा.पी

संपादक मंडल

प्रो.एस.कमलम्मा

डॉ.जी.गीताकुमारी

डॉ.बिन्दु.सी.आर

डॉ.षीना.यू.एस

डॉ.सुमा.आई

डॉ.एलिसबत्त जोर्ज

डॉ.लक्ष्मी.एस.एस

डॉ.धन्या.एल

डॉ.कमलानाथ.एन.एम

डॉ.अश्वती.जी.आर

डॉ.पार्वती चन्द्रन

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय	:	3
केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की हीरक जयंती	:	7
सुगतकुमारी की कविता	: डॉ. एस.तंकमणि अम्मा	11
श्रीकुमारन तंपी- कवि और गीतकार	: डॉ. पी.लता	15
'सुदर्शनम्' की दो कविताएँ : एक अवलोकन	: प्रो.सती.के	16
सही उत्तर चुनें	:	19
नाटकीय प्रसंगों की सशक्त अवतारणा : मलयालम उपन्यास 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' में	: डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा	20
मलयालम साहित्यः 1920 तक	: डॉ. सी.शान्ति	24
डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन	: डॉ. सौम्या वी.एम	32
सारा जोसफ का उपन्यास 'अकले-अरिके'-एक अध्ययन	: डॉ. लक्ष्मी एस.एस	35
ओ.एन.वी. और काव्याख्यायिका 'उज्जयिनी'	: डॉ.धन्या.एल	38
तकषि़ का उपन्यास साहित्य	: विजयलक्ष्मी.एल	44
मलयालम के इतिहास कथाकार ओ.वी.विजयन	: अजित्रा.आर.एस	46
मानव स्नेह के गायक पुतुशेरी रामचन्द्रन	: डॉ.पी.लता	48

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मैलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ डी.वी.सुरेख ई.एन फोण्ट में वर्ड या पेजमेकर फाइल में भेजें। रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता भी अंकित करें। संक्षिप्त जीवन-परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक

डॉ.पी.लता

शोध सरोवर पत्रिका

मूल्य : एक प्रति रु.100/-

वार्षिक शुल्क रु.400/-

सहकर्मी पुनरवलोकन समिति :

डॉ.एच.परमेश्वरन

डॉ.टी.के.नारायण पिल्लै

डॉ.के.श्रीलता

पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें - डॉ.पी.लता (संपादक, शोध सरोवर पत्रिका; मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी), आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफीस लेन, ई-28, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य। फोन : 0471 - 2332468, 9946253648

ई-मेल : akhilbharatheeyhindiacademy@gmail.com

वेबसाइट : www.shodhsarovarpatrika.co.in

संपादकीय मलयालम लेखन - एक अवलोकन

साहित्य समाज का दर्पण है। भाषा और साहित्य संस्कृति के संवाहक हैं। द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा है 'मलयालम'। दक्षिण द्रविड़ वर्ग की भाषाओं - 'तमिल' और 'मलयालम'- में मूल द्रविड़ भाषा से 'तमिल' भाषा का विकास पहले हुआ और 'मलयालम' भाषा का बाद में। इस दृष्टि से 'तमिल' और 'मलयालम' भाषाएँ आपस में बहनें हैं। सन् 800 से सन् 1300 तक का समय मलयालम भाषा के क्रमिक विकास का समय है। सन् 1300 तक आते - आते मलयालम भाषा ने करीब अपना वर्तमान रूप धारण कर लिया था। मलयालम भाषा के विकास में संस्कृत भाषा का योगदान भी महत्वपूर्ण है। संधिकालीन तमिल में संस्कृत का उतना प्रभाव नहीं रहा, जितना बाद की तमिल भाषा में रहा है। बाद के प्रभाव का कारण यह रहा कि अलवार कवियों ने काव्य में तमिल और संस्कृत का मणि-कांचन योग किया, जिससे 'मणिप्रवालम शैली' का विकास हुआ। मलयालम ने पूर्ण विकास प्राप्त करने की स्थिति में संस्कृत के शब्दों को ग्रहण किया। सन् 1200 और सन् 1600 के बीच का समय मलयालम का विकास काल है। यह विकास दो शैलियों- (1) संस्कृत मिश्रित मणिवालम् शैली और (2) शुद्ध मलयालम शैली - में हुआ। इन दोनों काव्य शैलियों में शृंगार रस प्रधान तथा भक्ति रस प्रधान काव्य रचे गये। यही नहीं, शुद्ध मलयालम शैली में केरल के लोक गीत - वटक्कन पाट्टुकल (उत्तरी गीत) तथा तेक्कन पाट्टुकल (दक्षिणी गीत)- भी गाये गये।

मलयालम में भी अन्य भाषाओं की तरह 'रामायण', 'महाभारत' और 'भागवत' के आधार पर 'भक्ति काव्य' लिखे गये। तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन ने सोलहवीं सदी में मलयालम में 'अध्यात्म रामायणम् किलिप्पाट्टु' राम काव्य की रचना की। 'किलिप्पाट्टु शैली' (शुक गीत शैली) मलयालम काव्य साहित्य को एषुत्तच्छन की देन है। 'भागवत्' के आधार पर पून्तानम् नंपूतिरि (1547 - 1640) ने कृष्ण काव्य की रचना की। 'संतानगोपालम् पाना', 'ज्ञानप्पाना', 'श्रीकृष्ण कर्णामृतम्' आदि उनकी रचनाएँ हैं। वे 'पाना' नामक साहित्य शाखा के उपज्ञाता हैं। 362 पंक्तियोंवाला एक लघु काव्य है 'ज्ञानप्पाना', जो सामान्य जनता का 'उपनिषद्' माना जाता है। मेल्पत्तूर नारायण भट्टतिरि ने (1560-1646) 'भागवत्' के आधार पर 'नारायणीयम्' की रचना की।

मणिप्रवालम शैली में शृंगार काव्य 'अच्चि चरितङ्ङल' लिखे गये। कुछ सन्देश काव्य 'मेघ सन्देशम्' की शैली में लिखे गये, जैसे - 'उण्णुनीलि सन्देशम्', 'कोक सन्देशम्', 'शुक सन्देशम्', 'मयूर सन्देशम्' आदि। लोक कलाओं में 'कूटियाट्टम्' (एक प्रकार का नृत्य नाटक) प्रसिद्ध है, जिसके विकसित रूप हैं 'रामनाट्टम्', 'कृष्णनाट्टम्', 'कथकलि' आदि। इन लोककला रूपों में साहित्यिक अंश भारतीय तथा कलात्मक अंश केरलीय रहे। 'तुल्लल साहित्य' के प्रणेता हैं कुंचन नंपियार।

आज तक साहित्य की सभी विधाओं - कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, जीवनी, संस्मरण, यात्रावृत्त आदि - पर रची गयी मलयालम साहित्य रचनाओं पर दृष्टि डालें तो कहा जा सकता है कि मलयालम साहित्य अत्यंत समृद्ध है। ज्ञानपीठ पुरुस्कार, पद्म पुरस्कार, मूर्त्तिदेवी पुरस्कार, केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे उच्च राष्ट्रीय पुरस्कारों से मलयालम के कई लेखक प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

'भारतीय ज्ञानपीठ' भारतीय साहित्य के विकास केलिए श्री साहू शांतिप्रसाद जैन तथा श्रीमती रमा जैन द्वारा स्थापित न्यास है। यह न्यास पुस्तकों का प्रकाशन करता है तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार, मूर्तिदेवी पुरस्कार आदि प्रदान करता है। 'भारतीय ज्ञानपीठ न्यास' द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जानेवाला सर्वोच्च पुरस्कार है 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', जिसकी स्थापना सन् 1965 में हुई थी। देश का कोई भी श्रेष्ठतम साहित्यकार जो भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं में से किसी भी भाषा में लिखता हो, इस पुरस्कार के योग्य है। जब वर्ष 1965 में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' की स्थापना हुई तब पुरस्कार राशि एक लाख रुपये मात्र थी। सन् 2005 में पुरस्कार राशि सात लाख रुपये के रूप में बढ़ायी गयी, जो वर्तमान में 11 लाख रुपये हो चुकी है। सन् 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की एकल रचना केलिए दिया जाता था। बाद में यह पुरस्कार साहित्य को लेखक की समग्र देन केलिए दिया जाने लगा। प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 1965 में मलयालम कवि जी.शंकर कुरुप के 'ओटक्कुषल' काव्य को प्रदान किया गया। सन् 2005 के ज्ञानपीठ पुरस्कार केलिए चुने गये हिन्दी साहित्यकार कुंवर नारायण पहले व्यक्ति थे, जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार राशि के रूप में सात लाख रुपये प्राप्त हुए।

प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त महाकवि जी.शंकर कुरुप 'जी' नाम से विख्यात है। उनका जन्म 2 जनवरी 1978 में अंकमाली (एरणाकुलम जिला) में हुआ। अपने 'ओटक्कुष़ल' काव्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ तो उस पुरस्कार राशि से उन्होंने सन् 1968 में मलयालम कवियों केलिए 'ओटक्कुष़ल अवार्ड' की स्थापना की। जी.शंकर कुरुप के 'ओटक्कुष़ल' काव्य का जी.नारायण पिल्लै और लक्ष्मीचन्द्रजैन का सहयोगी अनुवाद है 'बाँसुरी' (ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1966)।

सन् 1980 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त मलयालम कथाकार हैं एस.के.पोट्टक्काटु नाम से विख्यात 'शंकरनकुट्टी कुञ्ञिरामन पोट्टक्काटु' (1913-1982)। उनके 10 उपन्यास, 24 कहानी संकलन, 18 यात्रावृत्त, 4 नाटक और निबंध संकलन प्रकाशित हैं। उन्हें 'ओरु तेरुविन्टे कथा' (एक गली की कथा) उपन्यास को सन् 1961 में 'केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा सन् 1980 में ओरु देशत्तिन्टे कथा' (कथा एक प्रांतर की) को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी रचनाएँ कई देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित हुई हैं। 'ओरु देशत्तिन्टे कथा' का हिन्दी में 'कथा एक प्रांतर की' नाम से प्रो.पी.कृष्णन ने हिन्दी में अनुवाद किया (ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1981)।

'तकष़ि' नाम से विख्यात 'के.के.शिवशंकर पिल्लै' (1912 - 1999) सन् 1984 में 'कयर' उपन्यास को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित हुए। आलप्पुष़ा जिले का 'तकष़ि' गाँव उनका जन्म स्थान है। केरल के

बहुचर्चित कथाकार तकषि़ हिन्दी कथा सम्राट प्रेमचन्द के समानांतर कथाकार हैं। तकषि़ तथा प्रेमचन्द का तुलनात्मक अध्ययन करके कुछ व्यक्तियों ने पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की है। तकषि़ ने 35 उपन्यास और 600 कहानियाँ लिखीं। तकषि़ के बहुचर्चित उपन्यास हैं 'चेम्मीन' (1956) और 'कयर' (1980)। तकषि़ सन् 1985 में पद्मभूषण से भी विभूषित हुए। उन्हें सन् 1957 में 'चेम्मीन' को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला। यह उपन्यास कई भाषाओं में अनूदित हुआ है। उनके 'चेम्मीन', 'एणिप्पटिकल' जैसे कुछ उपन्यासों का फिल्मीकरण भी हुआ है। तकषि़ के 'चेम्मीन' उपन्यास का श्रीमती भारती विद्यार्थी ने सन् 1959 में हिन्दी में 'मछुआरे' नाम से अनूदित किया (ज्ञानपीठ प्रकाशन)।

'एम.टी' नाम से विख्यात केरलीय कथाकार एम.टी.वासुदेवन नायर (जन्म- 9 अगस्त 1933) को समग्र साहित्य सेवा केलिए सन् 1995 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे पटकथाकार और फिल्म निदेशक भी हैं। उनका बहुचर्चित उपन्यास है 'कालम्'। इसे सन् 1970 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै ने सन् 1998 में इस उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद किया।

सन् 2007 में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित हुए मलयालम के प्रिय कवि श्री.ओ.एन.वी.कुरुप का पूरा नाम है 'ओट्टप्लाक्कल नम्पियाटिक्कल वेलुक्कुरुप'। वे कवि और फिल्म गीतकार थे। नाटकों तथा दूरदर्शन धारावाहिकों केलिए भी गानों की रचना करते थे। प्रगतिवादी कवि ओ.एन.वी.जी के कई कविता संकलन प्रकाशित हैं। इन्हें सन् 1998 में 'पद्मश्री' और सन् 2011 में 'पद्मविभूषण' प्राप्त हुए। ओ.एन.वी.कुरुप के 'उज्जयिनी' काव्य का डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर और 'स्वयंवरं' काव्य का 'स्वयंवर' नाम से डॉ.एस.तंकमणि अम्मा ने अनुवाद किये। उनकी फुटकल कविताओं के अनुवादों के चार संकलन प्रकाशित हैं। अनुवादक हैं- डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै, डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा तथा डॉ.पी.लता।

सन् 2019 का 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (55 वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार) प्राप्त मलयालम कवि हैं अक्कित्तम अच्युतन नंपूतिरि (जन्म 18 मार्च 1926)। 'इरुपतां नूट्टाण्टिन्टे इतिहासम्' जैसे इतिहास काव्य के प्रणेता हैं अक्कित्तम जी। इन्हें 'बलि दर्शनम्' कविता संग्रह को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इन्हें 'पद्मप्रभा पुरस्कार' (पद्म प्रभा फाउण्डेशन का पुरस्कार) सन् 2002 में प्राप्त हुआ। 'पद्मप्रभा पुरस्कार' (1996) प्राप्त सर्वप्रथम मलयालम साहित्यकार हैं उण्णिकृष्णन पुत्तूर। अक्कित्तम के 'इरुपतां नूट्टाण्टिन्टे इतिहासम्' और अन्य 32 कविताओं के हिन्दी अनुवादों का संकलन है 'बीसवीं सदी का इतिहास और अन्य कविताएँ'। अनुवादक हैं डॉ.वी.के.हरिहरन उण्णित्तान।

'ज्ञानपीठ पुरस्कार' के अलावा भारतीय ज्ञानपीठ न्यास' से दिया जानेवाला पुरस्कार है 'मूर्त्तिदेवी पुरस्कार'। सन् 1983 में इसकी शुरूआत हुई। दो लाख रुपये, प्रशास्ति पत्र और वाग्देवता की प्रतिमा पुरस्कार के रूप में दी जाती है। मलयालम कथाकार सी.राधाकृष्णन तथा मलयालम कवि अक्कित्तम इस पुरस्कार से सम्मानित लेखक हैं।

भारत में स्तरीय लेखन को प्रोत्साहन देने हेतु सन् 1954 में स्थापित संस्था है 'साहित्य अकादमी, दिल्ली'।

प्रतिवर्ष एक मलयालम लेखक यहाँ से पुरस्कृत होता है। यों कई मलयालम लेखक 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से नवाज़े गये हैं। शुरू में यह पुरस्कार प्राप्त मलयालम लेखक हैं - आर. नारायण पणिक्कर (रचना- भाषा साहित्य चरित्रम्, वर्ष 1955), ऐ.सी. चाक्को इल्लिप्परम्पिल (पाणिनीय प्रद्योतम्, 1956), तकषि़ ('चेम्मीन' उपन्यास, 1957), के.पी. केशव मेनोन ('कषिञ्ञकालम्' आत्मकथा, 1958), उरूब/ पी.सी.कुट्टिकृष्णन ('सुन्दरिकलुम् सुन्दरन्मारुम्' उपन्यास, 1960), जी. शंकर कुरुप ('विश्व दर्शनम्' कविता, 1963), पी.केशवदेव ('अयलक्कार' उपन्यास, 1964), एन. बालामणि अम्मा ('मुत्तश्शी' कविता, 1965), के.एम. कुट्टिकृष्ण मारार ('कला जीवितम् तन्ने' निबंध संकलन, 1966) आदि। सुभाष चन्द्रन (2014), के.आर. मीरा (2015), प्रभा वर्मा (2016), रमेशन नायर (2018), मधुसूदनन नायर (2019) आदि भी साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता मलयालम साहित्यकार हैं। धार्मिक पुरुष श्री नारायण गुरु की जीवनी पर आधारित महाकाव्य 'गुरु पौर्णमी' को कवि श्री.रमेशन नायर सन् 2018 में इस पुरस्कार के योग्य बने। 'अच्छन पिरन्ना वीटु' कविता संकलन को श्री मधुसूदनन नायर सन् 2019 में इस पुरस्कार से नवाज़े गये।

केरलीय हिन्दी तथा मलयालम लेखक पद्मश्री डॉ.वेल्लायनी अर्जुनन सन् 1975 से 1988 तक मुख्य संपादक के पद पर तथा सन् 2001 से 2004 तक निदेशक के पद पर राज्य सरकार के 'एनसाइक्लोपीड़िया प्रकाशन संस्थान' में सेवारत रहे। सन् 2019 में पद्मश्री प्राप्त डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की मलयालम और हिन्दी में कई कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

मलयालम की कई श्रेष्ठ कृतियों का हिन्दी में अनुवाद केरलीय हिन्दी लेखकों ने किया है। मलयालम से ही नहीं, अन्य भारतीय राज्य भाषाओं से भी हिन्दी में अनुवाद कार्य हो रहा है। विभिन्न भाषाओं से यों राष्ट्रभाषा हिन्दी में कृतियाँ अनूदित होने से उनका अनुवाद हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं में हो रहा है। यों हिन्दी दो भिन्न भाषाओं के बीच सेतु का कार्य कर रही है।

मलयालम साहित्य की स्थिति बहुत अच्छी है। स्तरीय लेखन करने के उपलक्ष्य में ही मलयालम लेखक उच्च तथा सर्वेच्च राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित होते हैं। केरल के कुछ हिन्दी प्रेमी व्यक्तियों के प्रयास से निकलनेवाली हिन्दी शोध पत्रिका 'शोध सरोवर पत्रिका' का अप्रैल अंक 'मलयालम साहित्य विशेषांक' के रूप में निकालने का संपादक समिति का निर्णय समीचीन है, जिससे किंचित मात्रा में ही सही मलयालम साहित्य की जानकारी हिन्दी दुनिया को हासिल हो जाए।

◆ संपादक
डॉ.पी.लता
मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
सरकारी महिला महाविद्यालय)
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की हीरक जयंती

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और संवर्द्धन (संवर्धन)के उद्देश्य से भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के तहत 1 मार्च 1960 को हुई थी। इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और गुवाहाटी में स्थित हैं। दिनांक 1 मार्च 2020 के दिन केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना के 60 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हीरक जयंती समारोह का भव्य आयोजन नई दिल्ली के विज्ञान भवन के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह का आरंभ राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी, समारोह के अध्यक्ष महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल, विशिष्ट अतिथि मुंबई विश्वविद्यालय से प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय, हैदराबाद विश्वविद्यालय से आर.एस.सर्राजू, केरल विश्वविद्यालय से प्रोफेसर एस. तंकमणि अम्मा, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रोफेसर अवनीश कुमार, उपनिदेशक डॉ. राकेश कुमार, पत्राचार पाठ्यक्रम ब्यूरो प्रमुख एवं कार्यक्रम प्रभारी डॉ. अनुराधा सेंगर समारोह में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन विधिवत दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचार के साथ हुआ। विद्या की देवी माँ सरस्वती की वंदना मनोहारी नृत्य प्रस्तुति के साथ की गई। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के हीरक जयंती समारोह के मुख्य अतिथि माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी को निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा पौधा एवं शॉल भेंट स्वरूप प्रदान कर स्वागत किया गया। इसके उपरांत अन्य अतिथियों का सम्मान केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रोफेसर अवनीश कुमार द्वारा किया गया। सम्मान स्वरूप सभी को पौधे एवं शॉल प्रदान किए गए। इसके उपरांत निदेशक महोदय द्वारा सम्मानित मंच एवं सभा को संबोधित कर स्वागत किया गया। बेहद कर्मठ एवं सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ तथा दूरदर्शी निदेशक केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने इस अभूतपूर्व क्षण में निदेशालय के पूर्व निदेशकों को याद कर कृतज्ञता अर्पित की तथा विगत तीन वर्षों की निदेशालय की उपलब्धियों की अकादमिक एवं प्रशासनिक स्तरों पर पृथक-पृथक विशद एवं ब्यौरेवार जानकारी प्रस्तुत की। हीरक जयंती का यह वर्ष निदेशालय की कीर्ति का स्वर्णिम युग है यह नि:संदेह कहा जा सकता है।

माननीय मंत्री महोदय के कर कमलों द्वारा निदेशालय का महत्वपूर्ण प्रकाशन देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तक के संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण एवं देवनागरी लिपि अभ्यास पुस्तक तथा हीरक जयंती लोगो का लोकार्पण किया गया। इसके उपरांत केंद्रीय हिंदी निदेशालय वेबसाइट, प्रकाशन वेबसाइट, यू ट्यूब चैनल 'हिंदी भाषा वाणी' तथा मोबाइल आप का भी माननीय मानव संसाधन विकास

मंत्री जी के कर कमलों द्वारा लोकार्पण कर राष्ट्र को समर्पित किया गया।

तदुपरांत माननीय मंत्री महोदय ने निदेशालय को हीरक जयंती की अशेष शुभकामनाएं एवं बधाई दी। अपने ओजपूर्ण वक्तव्य से सभा को संबोधित किया। मंत्री महोदय ने हिंदी की विकास यात्रा को आज़ादी पूर्व, आज़ादी के दौरान एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आंका। माननीय मंत्री जी ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय की उपलब्धियों एवं योजनओं पर प्रकाश डाला। स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को बढ़-चढ़कर सहभागिता की प्रेरणा दी। शिक्षा पुरस्कार एवं हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार योजना की भी सराहना की एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा पूर्व वर्षों के लेखकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किए जाने हेतु आह्वान किया। माननीय मंत्री महोदय ने हिंदी निदेशालय के प्रति अगाध प्रेम और स्नेह प्रदर्शित किया। ऐसा लग रहा था कि मंत्री महोदय निदेशालय की हर एक योजना के बारे में गहन जानकारी रखते हैं, हिंदी और केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विकासोन्मुखी योजनाओं से उनका गहरा जुड़ाव प्रकट हो रहा था। हिंदी निदेशालय के प्रति उनका अगाध स्नेह और आशीर्वाद स्पष्ट प्रतीत हो रहा था। उन्होंने सभागार में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों को भी सम्मानित करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किए। सभी लेखकों, कवियों, साहित्यानुरागियों के प्रति अपनी आत्मीयता प्रकट की। यह माननीय के उत्कृष्ट लेखकीय व्यक्तित्व एवं 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणीयता ही थी। केंद्रीय हिंदी निदेशालय परिवार एवं संपूर्ण भारत से आए उद्भट विद्वान मानो इस ज्ञान गंगा में डुबकियाँ लगा रहे थे। माननीय मंत्री महोदय का साहित्य प्रेम अद्भुत रूप से उनके व्यक्तित्व एवं वक्तव्य से परिलक्षित हो रहा था। हिंदी सहज, सरल और सुबोध है। भारत बहुभाषी देश है और यही इसका सौंदर्य है। हिंदी का शब्द भंड़ार अजस्र है। हिंदी में शब्द सामर्थ्य, लालित्य, मधुरता, जीवन, नवाचार एवं प्रगति वैशिष्ट्य के कारण हिंदी विश्व पटल पर अपना परचम लहराएगी। ऐसा दृढ़ विश्वास प्रकट हो रहा था माननीय मंत्री के उद्बोधन से। माननीय मंत्री महोदय ने हिंदी के विकास में आ रही विभिन्न कठिनाइयों की भी चर्चा की और इस हेतु सभी भारतीय भाषाओं के साथ ही हिंदी के समुचित विकास की रूपरेखा पर बल दिया। हिंदी की प्रगति के 'मिशन मोड' पर कार्य दिए जाने की आवश्यकता की ओर ध्यानाकर्षित किया। भारत जैसा उदारमना राष्ट्र कभी किसी से वैर नहीं रखता, यह उसकी संस्कृति में ही नहीं है। अत वह भाषाई स्तर पर भी वैर नहीं रखना चाहता, परंतु अंग्रेज़ी का वर्चस्व राष्ट्रहित और राष्ट्र की प्रतिभा के विकास के लिए हितकर नहीं है। अतः हमें अपनी भाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना चाहिए। पहले अपनी भाषा का हो मान, फिर दूसरी भाषा का सम्मान के भाव के साथ अधिक से अधिक भाषाएं सीखने का प्रयास करें। माननीय मंत्री महोदय ने यह भी मज़बूती से स्पष्ट किया कि स्कूल की प्राथमिक स्तर की शिक्षा अपनी भाषा में होनी चाहिए और राज्यों में वहाँ की भाषा को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने तमिल, तेलुगु, मराठी और मैथिली जैसी भाषा सहित तमाम भारतीय भाषाओं के पुरातन और उच्च कोटि के होने की बात कही और कहा कि सभी भाषाओं को संरक्षित रखने की आवश्यकता

है। उन्होंने हिंदी निदेशालय द्वारा सभी भारतीय भाषाओंके लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। तदुपरांत पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग की ब्यूरो प्रमुख डॉ. अनुराधा सेंगर द्वारा माननीय मंत्री महोदय का औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों द्वारा भी सभा को सबोधित किया गया। हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर. एस. सर्राजू ने अपने बहुमूल्य और प्रासंगिक विचार सभागार में व्यक्त किए। हिंदी एवं तेलुगु साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित हस्ताक्षर श्री सर्राजू ने प्रथमतः हीरक जयंती के गौरवशाली समारोह हेतु केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय परिवार तथा उपस्थित सभा को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई दी। सम्माननीय अतिथि ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय की योजनाओं को हिंदीतर भाषियों और हिंदीतर राज्यों के लिए व्यावहारिक और बेहद कारगर बताया। अत्यंत महत्वपूर्ण योजना स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को वित्तीय सहायता एवं अनुदान योजना को जनोपयोगी एवं अत्यंत पारदर्शी बताया एवं कुछ सुझाव भी दिए। महोदय के सुझावों में शोध ग्रंथ पर अनुदान एवं अनुवाद के लिए पुरस्कार मुख्य थे। उन्होंने केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं को बेहद लोकप्रिय बताया जिनमें छात्र अध्ययन यात्रा, राष्ट्रीय संगोष्ठी, नवलेखक शिविर जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को प्रभावोत्पादक बताया। सम्माननीय प्रोफेसर सर्राजू जी ने निदेशालय के अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकाशन, संविधान स्वीकृत 22 भारतीय भाषाओं के भारतीय भाषा कोश के लोकप्रिय होने के कई दृष्टांत दिए। महोदय का कथन है कि भारतीय भाषा कोश संपूर्ण भारत को द्योतित करता है।

केरल विश्वविद्यालय से सम्माननीय प्रोफेसर एस. तंकमणि अम्मा का हिंदी भाषा प्रेम उनके वक्तव्य से सहज ही मुखर हो रहा था। उन्होंने कहा निदेशालय की योजनाओं की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है। प्रोफेसर तंकमणि अम्मा ने कई उदाहरण पेश किए जिनसे सहज ही स्पष्ट हो रहा था कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं ने हिंदीतर भाषी राज्यों में अपनी पहचान सशक्त रूप से स्थापित की है। उन्होंने निदेशालय की पत्राचार पाठ्यक्रम योजना के माध्यम से सिखाई जा रही हिंदी को भी अत्यंत प्रभावी बताया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकाशन भाषा पत्रिका की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की और अत्यंत लोकप्रिय और स्तरीय बताया। वार्षिकी पत्रिका को भी अनूठा एवं अद्वितीय बताया। उसमें प्रकाशित समस्त 22 भारतीय भाषाओं के साहित्य को तुलना से परे बताया और यह भी सुझाव दिया कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को समेटे हुए भाषा पत्रिका को द्वैमासिक के स्थान पर मासिक किया जाना चाहिए। मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय जी ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय की हीरक जयंती वर्ष को उसकी उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण योगदान बताया। महोदय ने सभा को संबोधित करते हुए भारतीय भाषाओं के समक्ष उत्पन्न संकट को समझने का आग्रह किया और उद्‌बोधन किया कि भाषा को बचाने से ही देश और संस्कृति की रक्षा होगी। भारत का बहुभाषिक स्वरूप उसकी ताकत है। मंदारिन के

रूप में हिंदी के समक्ष खड़े संकट की ओर ध्यानाकर्षित किया और कहा कि इससे निपटने के लिए हिंदी के साथ सभी भारतीय भाषाएँ एकजुट हों। निदेशालय के महत्वपूर्ण प्रकाशन भारतीय भाषा कोश की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय जी ने यह भी बताया कि जिस प्रकार निदेशालय में सभी भारतीय भाषाएँ समादृत हैं इसे भारतीय भाषा निदेशालय कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। निदेशालय को उसके विभिन्न द्विभाषी, त्रिभाषी, बहुभाषी कोशों से मिल रही प्रसिद्धि की ओर भी ध्यानाकर्षित किया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के हीरक जयंती समारोह की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति परम आदरणीय प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने ओजस्वी अध्यक्षीय वक्तव्य से सभा में उपस्थित विद्वत्जन को अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत कराया। हिंदी के क्षेत्र में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की महनीय भूमिका पर प्रकाश डाला। राष्ट्र के स्वाभिमान के घटक के रूप में भाषा की भूमिका को स्थापित किया। हिंदी तभी बढ़ेगी जब वह अपनी भगिनी भाषाओं को अपने साथ लेकर आगे

बढ़ेगी। भाषा बहता नीर है। भाषा की शब्द संपदा का पोषण करने की आवश्यकता है। अनावश्यक रूप से अन्य भाषा की संज्ञाओं को अनूदित करने की आवश्यकता नहीं है। उसे मूल रूप में ज्यों का त्यों व्यवहार में लाना चाहिए। साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की स्वीकार्यता चहुंओर है। हिंदी गुरु ग्रंथ साहिब, कबीर, नानक, तुलसी, सूर, मीरा और गालिब सभी की भाषा है। अध्यक्ष महोदय का हिंदी और भारतीय भाषा प्रेम अद्भुत था। अध्यक्षीय संबोधन के उपरांत अतिथियों को हीरक जयंती स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप, निदेशक महोदय द्वारा प्रदान किए गए। उद्घाटन सत्र का औपचारिक आभार ज्ञापन केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उपनिदेशक डॉ. राकेश कुमार द्वारा किया गया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के गौरवशाली हीरक जयंती समारोह के अंतर्गत विभिन्न प्रांतों से आए हिंदी सेवियों के वक्तव्यों जिसमें मुख्यत:उत्तर पूर्व से डॉ. सुशील चौधरी, समन्वय हिंची पत्रिका के संपादक डॉ. नवीनचंद लोहानी जी एवं दक्षिण भारत से प्रखर वक्ता श्री गोविंद राजन जी ने हिंदी की महत्ता दर्शाते हुए केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनोरम प्रस्तुति छंदम कला केंद्र के सहयोग से हुई। इस अवसर पर कलाकारों का उत्साह वर्धन करते हुए सम्मानित किया गया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के गौरवशाली अभूतपूर्व हीरक जयंती समारोह के अवसर पर प्रतिष्ठित कवियों एंव गज़लकारों से सुसज्जित काव्य गोष्ठी आयोजित हुई। मंचासीन कवियों में श्री विवेक गौतम, श्री बी.एल.

(शेष पृ.सं. 45)

सुगतकुमारी की कविता (सरस्वती सम्मान प्राप्त काव्य संकलन 'मणलेषुत्त्' (बालुका लेख) के विशेष संदर्भ में)

♦ डॉ.एस.तंकमणिअम्मा

मलयालम कविता के यश-ध्वज को राष्ट्रीय स्तर पर फहरानेवाली कवयित्री के रूप में श्रीमती सुगतकुमारी का नाम लिया जाता है। अनेक राज्यस्तरीय और राष्ट्रस्तरीय पुरस्कारों से अलंकृत सुगतकुमारी को सन् 2012 का लब्धप्रतिष्ठ सरस्वती सम्मान भी प्राप्त हुआ है। यह सम्मान उनकी प्रसिद्ध कृति 'मणलेषुत्त्'(बालुका लेख) पर मिला है। मणलेषुत्त् का मतलब है रेत अथवा बालुका पर लिखा हुआ अर्थात् रेत लेख या बालुका लेख। सन् 2006 में प्रथम प्रकाशित इस कृति में सुगतकुमारी की सत्ताईस कतिवाएँ संकलित हैं।

सुगतकुमारी मलयालम की श्रेष्ठ और लोकप्रिय कवयित्री हैं जिनकी काव्ययात्रा पिछले साढ़े छः दशकों से ज़ारी है। कवयित्री की कविता की सही पहचान केलिए उनके जीवनवृत्त की थोड़ी सी जानकारी आवश्यक जँचती है।

संक्षिप्त जीवनवृत्त

सुगतकुमारीजी का जन्म केरल के तिरुवनंतपुरम में सन् 22 फरवरी 1934 में हुआ। उनके पिता भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी तथा मलयालम के जाने-माने कवि बोधेश्वरन थे तथा माता थीं प्रो.कार्त्यायनि अम्मा। दर्शन शास्त्र में सुगतकुमारी ने एम.ए की उपाधि प्राप्त की। सालों तक वे तिरुवनंतपुरम के जवाहर बालभवन की प्राचार्या रहीं। 'तळिर'(पल्लव) नाम की प्रसिद्ध बालपत्रिका का संपादन भी उन्होंने किया। प्रकृति-संरक्षण समिति तथा 'अभया' नामक अशरण एवं मनोरोगग्रस्त स्त्रियों और बच्चों की संस्था की वे संस्थापक सचिव रही हैं। राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने सराहनीय सेवा प्रदान की है। स्त्री, प्रकृति तथा पर्यावरण के संरक्षण के लिए निर्भय लड़नेवाली सामाजिक कार्यकर्ती भी हैं सुगतकुमारी। उनके पति डॉ.वेलायुधन नायर जी दिवंगत हुए हैं। उनकी एकमात्र पुत्री लक्ष्मी मलयालम की कवयित्री तथा मनोविज्ञान विशेषज्ञ हैं।

प्रमुख काव्यकृतियाँ

म ुत्तुच्चिप्पि(सीपी), स्वप्नभूमि, पातिराप्पूक्कल्(आधी रात के फूल), पावं मानवहृदयं(बेचारा मानव हृदय), इरुल्च्चिरकुकल्(अंधेरे पंख), प्रणामं(प्रणाम), रात्रिमषा(रात की बारिश), अंपलमणि(मंदिर की घंटी), कुरिन्जिप्पूक्कल्(करिंज फूल), तुलावर्षप्पच्चा(आश्विन महीने की उत्तर-पूर्वी बरसात की हरीतिमा), राधयेविटे? (राधा कहाँ है?), कृष्णकवितकळ् (कृष्णकविताएँ), देवदासी, मणलेषुत्त्(बालुका लेख), वाष़त्तेन (केले का शहद) तथा सुगतकुमारियुटे कवितकळ्(संपूर्ण), सुगतकुमारी की कविताएँ (संपूर्ण) (2011 में प्रकाशित)।

पुरस्कार एवं सम्मान

- 'पातिराप्पूक्कल्'(आधी रात के फूल) केलिए केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

● रात्रिमषा (रात की बारिश) केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार।

● 'अंपलमणि'(मंदिर की घंटी) केलिए ऑटक्कुषल् पुरस्कार, आशान पुरस्कार, वयलार पुरस्कार।

●'तुलावर्षप्पच्चा' (अश्विन महीने की हरीतिमा) केलिए विश्वदीपं पुरस्कार।

● 'राधयेविटे?' (राधा कहाँ?) केलिए अबूदाबी मलयालिसमाजं पुरस्कार।

● 'कृष्ण कवितकळ्'(कृष्ण कविताएं) केलिए जन्माष्टमी पुरस्कार, एषुत्तच्छन पुरस्कार। समाज-सेवा केलिए भाटिया अवर्ड।

● भारत सरकार का प्रथम 'वृक्षमित्र' पुरस्कार।

● 2006 में 'पद्मश्री'।

● 2012 में मण्लषुत्त् (काव्य संग्रह) के लिए सरस्वती सम्मान।

सुगतकुमारी का काव्य-विकास

सुगतकुमारी की पहली कविता 'मातृभूमि' पत्रिका में प्रकाशित होकर आयी थी। प्रारंभ में वे 'श्रीकुमार' नाम से लिखा करती थी। बाद में उन्होंने अपना असली नाम से लिखना शुरू किया। अनेक कविताएं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। 'मुत्तुच्चिप्पि' (सीपी) उनकी कविताओं का प्रथम संकलन है जो 1961 में प्रकाशित हुआ। अनंतर काल में उनकी काव्य-यात्रा अबाध गति से ज़ारी रही। उनकी प्रारंभिक कविताओं का मूल स्वर प्रेम, पीड़ा, प्रकृति आदि हैं। शनैः शनैः उनकी कविता ने नया मोड़ लिया। अपनी आस्तिकता तथा तीव्र वैयक्तिक भावनाओं के भीतर कवयित्री ने युगबोध को वाणी दी।

'मणलेषुत्त्' (बालुका लेख) में संकलित उसी शीर्षक कविता में प्रेम और विरह की अमर गायिका का रूप उजागर होता है। यह कविता एक चिरपुरातन सत्य की ओर संकेत करती है। कतिपय पंक्तियाँ लें -

' 'एक कोटि उँगलियाँ
चाह से, प्रकंपन से
बालुका में लिख लेती हैं
'प्रेम'.....
एक कोटि लवण-लहरें तेज़ी से आकार
उन लघुलिपियों को मिटा देती हैं।"

इसी आशय की एक कविता उन्होंने पहले भी लिखी है-

"एक तृणाग्र ले, उस बालुका-तट पर
यों लिख दिया मैंने 'मैं तुझे प्यार करती हूँ'
उछल कूद कर आयी क्रूर लहरों ने
तत्काल मिटा दिया उस लेख को।"

ऐसी कविताओं में कवयित्री की दार्शनिक विचारधारा की भी झलक मिलती है।

कृष्ण और राधा के प्रणय और विरह को कथ्य बनाकर कवयित्री ने अनगिनत कविताएँ रची हैं। उनकी लंबी कविता 'राधा कहाँ है?' कविता एका केंद्रबिंदु है। हरिऔध के 'प्रियप्रवास' की राधा तथा धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' की राधा के साथ सुगतकुमारी की राधा की तुलना यहाँ संगत है। राधा-कृष्ण सबंधी कवयित्री की संकल्पना अपने ढंग की अनूठी और मौलिक है जो भारतीय सांस्कृतिक परंपरा तथा आधुनिक युग-चेतना को एकसाथ संवहन करनेवाली है। भारत की हर नारी में कवयित्री राधा का दर्शन करती है। तभी तो वे कह उठती हैं-

"हमारे इस अतिकंगाल देश में/ अपने उर के भीतर
कोई भी नारी/ स्वयं राधा ही तो है।"

प्रेम के बारे में कवयित्री कह उठती हैं-

"एकमात्र प्रेम के सिवाय और क्या है इस दुनिया में जो पुनरावृत्ति से विरस न होता है।"

सुगतकुमारी की प्रेम तथा विरह विषयक कविताओं में यत्र-तत्र-सर्वत्र बहनेवाली आध्यात्मिकता की अंतर्धारा उनकी कविताओं को एक विलक्षण आयाम प्रदान करती है। सुगतकुमारी की प्रेम और पीड़ा की कविताओं से गुज़रते हुए हिंदी पाठकों का ध्यान सहज ही वेदना की अमर गायिका महादेवी वर्मा की कविताओं की ओर खिंच जाता है। दोनों भारतीय भाषा-कवयित्रियों की कविता में अभिव्यंजित प्रेम और पीड़ा भाव का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण विषय रहेगा।

बीसवीं शती के अंतिम दशकों में, याने वैश्वीकरण और बाज़ारीकरण के प्रबल प्रभाव के दौरान राज्यव्यापी स्तर पर प्रकृति और परिस्थिति के संतुलन पर कुठाराघात करनेवाली जो करतूतें चलीं, कवयित्री ने उसका डटकर विरोध किया, उसके विरुद्ध आवाज़ उठायी। केवल कथनी से नहीं करनी से भी उन्होंने उसका प्रतिरोध किया। 'प्रकृति संरक्षण समिति' की कर्मठ कार्यकर्त्री के रूप में कवयित्री ने जनता को चेतावनी दी और उन्हें प्रकृति और परिस्थिति-संरक्षण की ओर सजग कर दिया। इस सिलसिले में उन्होंने वृक्ष संबंधी तथा परिस्थिति संरक्षण संबंधी कई कविताएं लिखीं। 'मरङ्ङल्'(पेड़), 'मरत्तिनु स्तुति', 'पाला पावमाणु'(छितवन बेचारी है), 'अट्टप्पाटिये स्वप्नं कंटु ञानिन्नुं'(आज भी मैंने सपने में अट्टप्पाटि को देखा), 'सैलेंट वालियिल् वीण्टुं'(सैलेंटवाली में फिर एक बार) जैसी कविताएँ इसके प्रमाण हैं।

प्रियतम की मत्यु ने कवयित्री के जीवन को जिस भांति झकझोर कर दिया था, उसके मर्मस्पर्शी चित्र उन्होंने अपनी कविताओं में उकेरे हैं। 'मरणकवितकळ्'(मृत्युगीत), 'तनिच्चु तनिच्चिनि' (निपट एकांतता में अब), 'ओट्टुक्कत्ते तिरुवोणं'(अंतिम तिरुओणं), 'पोयतिनु शेषं' (जाने के बाद), 'रात्रियिल् गंगोत्रियिल्' (गंगोत्री में रात के वक्त) जैसी कविताएँ कवयित्री के 'विधवा शोक गीत' ही हैं जो पाठकों के हृदय को गहरे छूनेवाली है।

सुगतकुमारी की स्त्री-पक्ष-रचनाएँ अहं महत्त्व की हैं। अपनी कई कविताओं में उन्होंने स्त्री जीवन की विवशता, विडंबना और अभिशप्तता का सटीक अंकन किया है। स्त्री-विमर्श की कई तहों को ये कविताएँ उन्मीलित करती हैं। 'अम्मा' शीर्षक उनकी कविता बहुचर्चित है। माता की कोख से शुरू होकर दहकती चिता तक चलनेवाली नारी की पीड़ा वस्तुतः इतिहास की धारावाही कहानी रही है। 'अम्मा' (माँ) नारी मुक्ति संघर्ष की कविता है। कंस के कारागार में बंद पड़ी देवकी की चिंताधारा के ज़रिए यह कविता रूपायित होती है। कवयित्री कहती हैं -

"आठ बच्चों को जनम देकर भी
जो उन्हें दूध पिला नहीं सकी थी,
हाय! अथाह अश्रु-भंवर में
जो डूब गयी थी,
एक साथ दूध और आँसू
जिसने खब बहाये थे,
सागर-सा महादुखों को
जो एक साथ पी गयी थी...।"

देवकी की स्मृतियों में वर्तमान नारी-उत्पीड़न के अनगिनत दृश्य पुनर्जन्म लेते हैं। कवयित्री पूछ उठती हैं -देवकी की रक्षा के लिए आये कृष्ण के समान भारतीय नारी की रक्षा के लिए क्या कोई शिशु आएगा?

स्त्री के स्वप्न का सम्मान करनेवाली कवयित्री यही चाहती हैं कि नारी की रक्षा केलिए स्वयं नारी ही आगे बढ़े और अत्याचारों का विरोध करे। कवयित्री की प्रत्याशा हैं-

"उसके आने के पहले
क्या कोई नारी
कालाग्नि ज्वाला-सी
चमकती हंसी से
उँगली उठाकर
क्रोध तप्त होकर
हत्यारे का हाथ हटाकर उसके सम्मुख
तनकर खड़ी होकर
निषेध के स्वर में
चीत्कार करे कि
आगे ऐसा नहीं होगा।"

सुगतकुमारी की 'बच्ची 1990' शीर्षक कविता भी ज़बरदस्त स्त्री पक्ष स्वर को मुखरित करती है। भ्रूण को स्त्री जानते ही उसकी हत्या करने को विवश माताएँ, बच्ची के जन्म पर उसे मारने को लाचार माताएँ, पेट पालने के चक्कर में पेट में बच्चे को ढोनेवाली नारियाँ, पूरा दहेज न दे पाने पर जलकर राख बननेवाली नारियाँ, नशे में चूर पुरुष के हाथों रोज़-रोज़ पिटे जाने केलिए मंगल सूत्र में बंधनेवाली नारियाँ, लाल गलियों में फेंकी जानेवाली निरीह बालिकाएँ और तरुणियाँ सबकी दर्दनाक तस्वीरें सुगतकुमारी ने अपनी कविताओं में खींची हैं।

'राज्य महिला आयोग' के अध्यक्ष पद पर कार्यरत होते हुए उन्होंने अपने समक्ष आयी बच्चियों, बालिकाओं, किशोरियों, युवतियों, विधवाओं और वृद्धाओं की जो मर्मस्पर्शी कहानियाँ सुनीं, उनके जीवंत चित्र 'मणलेषुत्त्' में संकलित 'वनिता कम्मिशन' (महिला आयोग) शीर्षक कविता में प्रस्तुत हैं। कतिपय पंक्तियाँ लें-

"वह फिर मेरे सामने आ बैठी
नयन और गाल दोनों गीले थे
पुरानी-पुरानी कहानियाँ लेकर
वह आज फिर मेरे सामने आयी।"

प्रेमी पुरुषों द्वारा धोखा खायी गयी स्त्रियाँ, दहेज के नाम पति द्वारा प्रताड़ित नारियाँ, बलात्कार की शिकार बनी बालिकाएँ, बच्चों की भूख मिटाने केलिए अपना तन बचने के कसूर में तथाकथित सदाचारियों द्वारा शिरोमुंडन की गयी नारियाँ, संतानों द्वारा परित्यक्त वृद्ध माताएँ सब उनमें शामिल हैं। वेश्यावृत्ति के कसूर में स्त्री को अपराधी सिद्ध करने तथा पुरुष को बचाने की सामाजिक नीति पर भी कवयित्री करारा व्यंग्य करती हैं। सुगतकुमारी की कविताओं में अंकित ये दर्दनाक चित्र वस्तुतः पाठकों के मन को मथ डालते हैं।

कवयित्री की मानवतावादी दृष्टि उनकी कविता का उदात्त एवं विशिष्ट पहलू है। उनकी यही दृष्टि मलयालम कविता को औदात्य के उत्तुंग शिखर पर प्रतिष्ठापित करती है। 'मणलेषुत्त्' (बालुका लेख) की 'इरुपत्तिओन्नां नूट्टांटिनोटु' (इक्कीसवीं सदी के प्रति) शीर्षक कविता इसका प्रस्पष्ट प्रमाण है। हर मानवतावादी कवि की भांति सुगतकुमारी भी इक्कीसवीं सदी की मानव जाति के भविष्य के प्रति चिंतित हैं। इस चिंता के साथ-साथ कवयित्री का मन प्रार्थना निरत है कि यह शताब्दी मानवता के लिए भलाई लेकर उपस्थित हो जाए। कविता की कुछ पंक्तियाँ लें-

"नमस्कार ! नमस्कार
हे तेजोमय महोदय

सहस्राब्द महामूर्ते!
तेरा मुख हो जावे सौम्य
अंधकार-सागर के तरंग-शिखरों पर
तेरी कृपा उषःसूर्य शोभा ज्यों दमक उठे!
दुख तप्त, महाभीत यह भूमि अंजलिबद्ध हो खड़ी है
उसकी रक्षा करें, निज करों से पोंछ ले उसके आँसू
नमस्कार, नमस्कार प्रभामय, दयामय
सहस्राब्दमूर्ते, हमारी रक्षा करें।"

अपनी प्रर्थना को कवयित्री आगे बढ़ाती है-

"एक ही विनती, आगे इस मिट्टी में न बहे खून
माँ की संतानें आपस में न मचाएँ हत्याकांड।
काल पुरुष हे देव! देव! कृपा करें हम पर
क्रोध न करें, करुणा भाव अपना लें।
प्रदान करें शांति, बेचारी धरती को मिले सुख
तेरी संतानों को प्रदान करें केवल करुणा।
तप्त हृदयों में बरसा दे स्नेहार्द्रता
ज़रा-सा आश्वासन मिले। 'वसुधैव कुटुंबकम्'।"

सुगतकुमारी की कविता को 'सत्य-सौंदर्य की कविता' उद्घोषित करते हुए मलयालम के लब्धप्रतिष्ठ कवि ओ.एन.वी.कुरुप ने यह सार्थक टिप्पणी की है - "सुगतकुमारी की कविताएँ मुझे इस तथ्य की याद दिलाती हैं कि सत्य और सौंदर्य दो पृथक तत्त्व नहीं हैं।" विश्व मंगल ही सुगतकुमारी की कविता का मूलमंत्र है।

♦ पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
पूर्व डीन, केरल विश्वविद्यालय।
मो-9349193272

श्रीकुमारन तंपी- कवि और गीतकार

♦ डॉ. पी.लता

मलयालम सिनेमा का जीनियस, लेजेन्ट जैसे विशेषणों से विभूषित श्रीकुमारन तंपी का फिल्मी व्यक्तित्व बहआयामी है। गीतकार, सिनेमा निर्देशक, सिनेमा निर्माता तथा पटकथाकार के रूप में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने 3000 से ज़्यादा फिल्मी गीत लिखे। 29 फिल्मों का निर्देशन किया, 35 फिल्मों का निर्माण किया और 78 पटकथाएँ लिखीं। 'काट्टुमल्लिका' सिनेमा केलिए गान-रचना करके तंपीजी ने फिल्म दुनिया में पदार्पण किया। 'मोहिनियाट्टम्' (1975) तंपीजी द्वारा निर्मित सर्वप्रथम सिनेमा है। तंपीजी के निर्देशन में बना सर्वप्रथम सिनेमा है 'चन्द्रकांता' (1974)।

श्रीकुमारन तंपी का जन्म 16 मार्च 1940 को केरल राज्य के आलप्पुष़ा जिला के हरिप्पाटु नामक गाँव में हुआ। स्वर्गीय पिता कलरिक्कल कृष्णपिल्लै मावेलिक्करा के तोन्नक्काटु खानदान के हैं और स्वर्गीय माता भवनिक्कुट्टीयम्मा तंकच्ची हरिप्पाटु के कोयिक्कल राजपरिवार की हैं। तंपीजी शिक्षा से सिविल इंजीनियर हैं, किन्तु फिल्म क्षेत्र में काम करते हैं। शैक्षिक योग्यताएँ हैं – बी.एस.सी (गणितशास्त्र) और ए.एम.आई.ई (सिविल इंजीनियरिंग) आदि।

साहित्यिक माहौलवाले घर में तंपीजी का जन्म हुआ। माता-पिता की पाँच संतानों (चार पुत्र और एक पुत्री) में तंपीजी तीसरी संतान हैं। 'श्रीकृष्ण परुन्तु' नामक चर्चित उपन्यास के प्रणेता स्व.पी.वासुदेवन तंपी उनके बड़े भाई हैं। प्रस्तुत उपन्यास का बाद में फिल्मीकरण भी हुआ। बारह वर्ष की आयु में वासुदेवन तंपीजी का एक कहानी संकलन प्रकाशित हुआ था। दूसरे बड़े भाई

(शेष पृ.सं. 31)

'सुदर्शनम्' की दो कविताएँ : एक अवलोकन

• प्रो.सती.के

मलयालम कवि स्वर्गीय श्री.बी.माणिक्यम् का जन्म सन् 1944 में केरल के कोल्लम जिला के अष़ीक्कल गाँव में 'कालीशेरिल मीनत्' नामक घर में हुआ था। उनके पिता भानुप्रकाश पणिक्कर कायंकुलम् राजा के नौ - सेना के जल सेनापति विट्टभ पणिक्कर की परंपरा के थे। माता पंकजाक्षि तिरुवितांकूर राजा के सेना नायक वेलायुध पणिक्कर की पोती थीं।

श्री.बी.माणिक्यम् की स्कूली शिक्षा आलप्पुष़ा जिला के वलियष़ीक्कल सरकारी स्कूल, अष़ीक्कल के आर.सी. इम्मानुवेल स्कूल और ओचिरा के आर.बी.एस.एम स्कूल में संपन्न हुई। फिर उन्होंने शिक्षा तिरुवनन्तपुरम इन्टरमीडियट स्कूल (अब यह स्कूल 'सरकारी आर्ट्स कॉलेज' नाम से जाना जाता है) में पढ़ा। तिरुवनन्तपुरम के यूनिवर्सिटी कॉलेज में स्नातक अध्ययन पूरा किया।

बचपन से ही राजनीति की ओर उनका झुकाव था। कॉलेज में कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के युवजन विभाग 'ए ऐ एस एफ' में स्टेट सेक्रटरी के पद पर कार्य करते थे। उस अवसर पर इन्हें कोलकत्ता के जेल में भी कुछ दिन काटने पड़े थे।

वे पत्रकारिता में विशेष रुचि रखते थे। पत्रकार के रूप में उनकी नौकरी का श्रीगणेश 'बालयुगं' नामक मासिका से हुआ था। बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के मुखपत्र 'जनयुगम्' नामक दैनिक समाचार पत्र के विशेष वृत्तान्त निवेदक (स्पेशल रिपोर्टर) का पद अलंकृत किया। 'मंगलम्', 'सतेण स्टार','फ्लेम' आदि अखबारों और मासिक पत्रिकाओं के लिए भी उन्होंने अपनी कलम चलायी। तमिलनाडु के 'विजय दूरदर्शन चानल' में भी इन्होंने न्यूज़ रिपोर्टर का काम किया। उन्होंने स्वयं एक दैनिक पत्र निकालने का प्रयत्न किया। उसकेलिए सरकार की अनुमति भी प्राप्त हुई। इसके सब औपचारिक कार्य पूर्ण हुए। फिर भी किसी कारणवश वे 'भारत वीक्षणम्' निकाल नहीं सके और मुसीबतों के बावजूद उन्होंने यह मोह छोड़ दिया।

उन्हें अपने विचित्र और विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण कई कष्ट झेलने पड़े थे। कई बार अधिकारियों की अप्रीति के शिकार बने। किसी के सामने सिर झुकाना उनके वश की बात नहीं रही। रिश्वतखोर, स्वार्थी तथा अन्यायी लोगों से वे दूर रहना चाहते थे। अपने प्रगतिशील साम्यवादी विचारों के कारण स्वेच्छाचारी अधिकारियों से अनमेल रखते थे। पार्टी के आदर्श स्वार्थ की धारा में विलीन हो गये। इस हालत में वे अपनी पार्टी के लोगों से निपटा नहीं जा सकते थे। लगता है, इसीलिए उन्होंने कलम को अपना सहचारी बनाया।

मई 2008 में प्रकाशित उनकी 43 कविताओं का संकलन है 'सुदर्शनम्'। माणिक्यम् जी के स्वर्गस्थ होने के बाद उनकी धर्मपत्नी तथा बेटे ने इस संकलन का प्रकाशन किया।

'सुदर्शनम्' कविता संकलन का श्री गणेश 'ऊँ.... हरि.... श्री' कविता से होता है और अंतिम कविता है 'सुदर्शनम्'। अंतिम कविता का नाम ही कविता संकलन को दिया है। पहली कविता की प्रारंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

"ऊँ
हरि श्री गणपतये नमः
अविघ्नमस्तु।"

यों कवि विघ्नेश्वर से विघ्न-निवारण करने की प्रार्थना करते हुए कविता का शुभारंभ करते हैं। यह कवि के अनभवों के आधार पर लिखी कविता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, लक्ष्मी, गणेश, गणों के पति शिव और शिव से अभिन्न शिवा और सरस्वती आदि सभी देवी - देवताओं की वन्दना करते हुए, रुकावटों को दूर करने की प्रार्थना करते हुए स्वयं कवि के विद्यार्जन का कार्य शुरू हुआ था। पर पढ़ाई के बाद वे पहुँचे अनपढ़, अनभिज्ञ नेताओं के मैदान में, राजनीति के मैदान में। आज के ये नेता लोग अपने पुरखों से बताये मार्ग पर नहीं चलते, वरन् अपने मत को उन पर थोप देते हैं। ये लोग गाँधीजी जैसे महात्मा को धकेल देते हैं। मार्क्स और मर्क्सिज़म की छाती फाड़ डालते हैं। कलम के बदले कुठार हाथ में लेते हैं। यही नहीं, लेनिन को चीरकर फेंक देते हैं। माओ का गला घोंटकर ऊपर उठाके दिखाते हैं। ये सब लिखने के बाद बेबस होकर कवि पूछते हैं - 'शिव' शिव! कौन किसका शत्रु।" ("शिव, शिव आरु आरुटे शत्रु"- मूल)

इस छोटी कविता में कवि ने गाँधीजी, कार्लमार्क्स, लेनिन और माओ जैसे नेताओं के नाम लेकर पाठकों को 18 वीं - 19 वीं सदी की ओर ले जाते हैं। नैतिक धर्म, सत्य अहिंसा आदि पर अटल विश्वास रखे गाँधीजी ने रक्तपात के बिना अंग्रेज़ों से विप्लव किया और भारत को स्वतंत्र बनाया। पर अब महात्मा गाँधी और उनके आदर्श कहीं न रह जाते हैं। गाँधीजी ने दलितों को 'हरिजन' बनाया, पर आज के नेताओं ने उन्हें फिर दलित बना डाला।

जर्मनी के कार्लमार्क्स ने देखा कि समाज में अमीर हमेशा अमीर और गरीब तो गरीब ही रह जाते हैं। समाज को पूँजीवादी सभ्यता से मुक्त कराने का प्रयत्न मार्क्स ने किया, जिससे समाज में न कोई मालिक रहेंगे न कोई मज़दूर रहेंगे, सब बराबर के होंगे। इसके लिए 'द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद' के सहारे उन्होंने साम्यवाद की स्थापना की। मार्क्स ने जो नींव डाली थी उसे आज के साम्यवादी जड़ से उखाड़कर दूर फेंक देना चाहते हैं।

रूसी क्रान्तिकारी लेनिन ने पहले पहल एक साम्यवादी राष्ट्र की स्थापना की। लेनिन के आदर्शों पर चले वह साम्यवादी राष्ट्र 'रूस' अब शिथिल हो गया है तो भारत की दशा क्या हो सकती है? चीन में माओ ने जो क्रान्तिकारी साम्यवादी तत्वों की स्थापना की थी, वह अब स्वत्व खो बैठा है। आजकल साम्यवादी के नाम पर पूँजीवादी बनकर रहनेवाले स्वांगियों से कवि को बेतुका है।

'ऊँ....हरि....श्री' नामक कविता में एक ओर आध्यात्मिकता की झलक है तो दूसरी ओर भौतिकता की। साम्यवादी आदर्शों में मुग्ध रहे कवि उसका खोखलापन महसूस करते हैं। आजकल शासक स्वार्थी हैं, मन से सच्चे नहीं हैं। अतः लगता है, अमीर-गरीब का समत्व, मालिक-मज़दूर का समत्व आगे कभी नहीं हो सकते। निराशा में पड़े आश्रयहीन कवि भगवान शिव को संबोधित करके पूछता है 'यहाँ कौन किसका शत्रु?'

'सुदर्शनम्' कविता संग्रह की और एक छोटी कविता है 'कॉलेज'। कवि कहते हैं कि कॉलेज ज्ञान की देवता सरस्वती का क्षेत्र है। यह दिव्य मंदिर है, सांस्कारिक केन्द्र है। पर आज यह कॉलेज शासकों को पढ़ाने का, विपक्ष में बैठनेवालों को मारने-मराने का, राजनीतिक मारपीट पढ़ाने का केन्द्र बन गया है। यह गुरुक्षेत्र (गुरु के अध्यापन का क्षेत्र) अब कुरुक्षेत्र (रणक्षेत्र) बन गया है। 'कॉलेज' कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार है -

कॉलेज पण्टु	कॉलेज पहले
पठिक्कानुम् पठिप्पिक्कानुम्	पढ़ने और पढ़ाने
उण्टाक्किय	को बनाया था, जो था
सरस्वती क्षेत्रं	सरस्वती मंदिर
दिव्य क्षेत्रं	दिव्य मंदिर
सांस्कारिक क्षेत्रं	संस्कृति का मंदिर
इन्नु	किन्तु आज है
भरिक्कुन्नोर्कु	शासकों को
पठिप्पिक्कानुम्	पढ़ाने को,
इरिक्कुन्नार्कु	बैठनेवालों को
प्रति -	विपक्ष में
पक्षत्तिरिक्कुन्नार्कु	बैठनेवालों को
अटिक्कानुम्	मारने और
अटिकोल्लिक्कानुम्	मराने को
राष्ट्रीयक्कार्कु	राजनीतिज्ञों को
अटि तट	मार-पीट
राष्ट्रीय अटितट	राजनीतिक मार पीट
पठिक्कानुम् पठिप्पिक्कानुम्	पढ़ने और पढ़ाने को
तीर्त्त	बनाया
क्षेत्रं	मंदिर
गुरुक्षेत्रं	गुरुक्षेत्र
कुरुक्षेत्रं (मूल)	कुरुक्षेत्र। (अनुवाद)

कवि द्वारा इस छोटी कविता में पुराने ज़माने में कॉलेज के माहौल और आज के माहौल का फरक दिखाया गया है। पहले विद्यार्थी के लिए कॉलेज विद्यार्जन का केन्द्र था। वह विद्यादेवी सरस्वती का आवास स्थान माना जाता था। वह स्थान दिव्य माना जाता था। गुरु तो विद्यार्थियों को अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाते थे। किन्तु मानसिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास का वह सरस्वती मन्दिर आज तो शासक वर्ग को क्रांति पढ़ाने का केन्द्र हो गया है। यही नहीं, विपक्ष में बैठनेवालों को मारने और मराने का यत्न भी किया जाता है। यह राजनीतिक मार-पीट का मैदान बन जाता है। इससे आज का बच्चा कल का नागरीक नहीं, गुंड़ा बन जाएगा। अधिकारी वर्ग की ऊंगली पर नाचनेवाले खिलौनों की सृष्टि होती है अब कॉलेज में। पहले वह गुरुक्षेत्र था, लेकिन अब वह कुरुक्षेत्र है।

'महाभारत' में वर्णित कुरुक्षेत्र कौरवों और पाण्डवों का युद्धस्थान रहा था। वहाँ आखिर अधर्म पर धर्म की जीत हुई। पर यहाँ कॉलेज में जो युद्ध होता है वह धर्म पर अधर्म की विजय के लिए है। इस कलियुग में स्वार्थी-निर्दय शासकों के शासन में न्याय- अन्याय की परवाह नहीं रहती।

'सुदर्शनम्' संकलन की 'ऊँ..... हरि...श्री' और 'कॉलेज' दोनों कविताएँ आकार में छोटी हैं, पर कवि ने इनमें सागर भरा है। कवि ने गद्य काव्य-शैली को अपने आशय की अभिव्यंजना केलिए चुना है। चाहे तो वे ताल-लय से युक्त कविता लिख सकते थे, क्यों कि सन् 1981 के पूर्व वे सिनेमा क्षेत्र में गीतकार के रूप में जाने-माने व्यक्ति थे। उस समय के कई जन-प्रिय गीत इनके रहे थे। वर्तमान काल में तो स्थिति बदल गयी है, करुणा, दया, प्रेम जैसी सात्विक भावना नहीं रह गयी है। क्रोध, कुंठा आदि को अभिव्यक्त करने के लिए छंदबद्ध, अलंकारयुक्त गीत शोभा नहीं देता। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था को उलटने -पलटनेवालों के खिलाफ़ कवि के मन में जो आक्रोश है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए गद्य कविता ही उचित है। कवि माणिक्यम् जी ने अपने विचारों को व्यंग्य के माध्यम से 'सुदर्शनम्' संकलन की कविताओं में प्रकट किया है। छुरी से नहीं। तीखी भाषा और व्यंग्य शैली कवि माणिक्यमजी की भाषागत विशेषताएँ हैं। तत्कालीन राजनीति की असलियत का भंडाफोड़ करने में 'सुदर्शनम्' कविता संकलन में कवि सफल हुए हैं।

◆ पूर्व प्राफेसर,
सरकारी वनिता कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम।

सही उत्तर चुनें

1.महात्मागाँधी पर वल्लत्तोल से लिखी गयी कविताओं के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?

(अ) वी.के.मूत्ततु (आ) अभयदेव

(इ) रत्नमयी दीक्षित (ई) श्रीधर मेनोन

2.'चिन्ताविष्टयाय सीता' का अनुवादक कौन है?

(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

(आ) डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

(इ) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै

(ई) सुधांशु चतुर्वेदी

3.'ओटक्कुष़ल' के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?

(अ) जी.नारायण पिल्लै और लक्ष्मी चन्द्र जैन

(आ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर और डॉ.सुगन्धवल्ली

(इ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर और डॉ.सुनिता बाई

(ई) डॉ.एस.तंकमणि अम्मा और के.जी.बालकृष्ण पिल्लै

4.'वीणपुवु' के हिन्दी अनुवाद का नाम क्या है?

(अ) गिरा हुआ फूल (आ) मुरझाया फूल

(इ) पड़ा हुआ फूल (ई) सूखा फूल

5.'भक्ति दीपिका' का हिन्दी अनुवाद किसने किया?

(अ) अभयदेव (आ) नारायण देव

(इ) पी.जी.वासुदेव (ई) कवियूर शिवराम अय्यर

(शेष पृ.सं. 23)

नाटकीय प्रसंगों की सशक्त अवतारणा : मलयालम उपन्यास 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' में

♦ डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा

मलयालम साहित्य में उपन्यास साहित्य का विकास अंग्रेज़ी साहित्य के प्रभाव से हुआ है। मलयालम का प्रथम उपन्यास अप्पुनेटुङ्ङाटी का 'कुन्दलता' है, जो प्रथम आन्दोलनात्मक कृति के रूप में उल्लेखनीय है। औपन्यासिक रूप में प्रथम स्थान चन्दु मेनोन की कृति 'इन्दुलेखा' को दिया जा सकता है। बाद के उपन्यासों की शृंखला में श्री.सी.वी.रामन पिल्लै के 'मार्ताण्डवर्मा', 'धर्मराजा', 'राजराज बहादुर', 'प्रेमामृतम्' आदि चर्चित रहे। राष्ट्रीय चेतना के उल्लेखनीय उपन्यास हैं- अप्पन तम्पुरान का 'भूतरायर' कप्पन कृष्णमेनन का 'चेरमान पेरुमाल' आदि, जो अपने समय में चर्चित रहे। के.एम. पणिक्कर का उपन्यास 'केरल सिंहम्' एक श्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है पाश्चात्य साहित्य के प्रबल प्रभाव से मलयालम में सामाजिक उपन्यास लिखे जाने लगे। कालान्तर में आंचलिकता की प्रवृत्ति उभरी और अस्तित्ववाद का भी प्रभाव दिखायी देने लगा।

साहित्य अकादमी से पुरस्कृत उपन्यासकार हैं श्री.एम.मुकुन्दन। वे अपनी औपन्यासिक परम्परा के पी.सी. कुट्टि कृष्णन (उरूब), तकषि़, एन.ई.बलराम आदि से प्रभावित हैं और अपनी रचनाओं का आधार अपने अनुभवों, जीवन-यथार्थ और स्वप्नदर्शिता को बनाया। उनके प्रकाशित उपन्यासों और कहानी संग्रहों की संख्या अधिक है। 'एन्ताणु आधुनिकता' उनकी समीक्षात्मक कृति है। 'साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' में फंतासी देखा जाता है। इसमें समाज से बहिष्कृत और उपेक्षित व्यक्तियों की मूक स्थिति का आकलन किया गया है और आख्यानात्मक पद्धति से यथार्थ का अन्तरंग उद्घाटित करने का पयास किया गया है। मूलतः वे आधुनिक पश्चिमी साहित्यिक प्रवृत्तियों से जुड़े हैं और कामू, सार्त्र आदि के जीवन-दर्शन के केरलीय प्रतिनिधि हैं। वस्तुतः उनके संस्कारों का निर्माण केरल स्थित पूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश मय्यषि़ (अंग्रेज़ी नाम 'माही') के वातावरण और परिस्थितियों में हुआ है। इन्हीं संस्कारों, प्रभावों और वातावरण की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति उनके उपन्यास 'मय्यषि़ पुष़युटे तीरङ्ङलिल' (माही नदी के किनारे) में हुई, जो पर्याप्त लोकप्रिय हुआ और 'केरल साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत भी। इसमें मय्यषि़ के स्वतन्त्रता आन्दोलन का विस्तृत चित्रण है। इस स्वतन्त्रता-आन्दोलन के बाद मय्यषि़ में जिस राजनीतिक - सामाजिक- आर्थिक स्थिति आयी, जन - विश्वासों का निर्माण हुआ, समाज में जिन विभिन्न स्तरों का उदय हुआ और नयी मानसिकता का उदय हुआ, इन सब

का चित्रण 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' में हुआ है। इस कृति का नाम प्रतीकात्मक है, जिसका हिन्दी में उपयुक्त रूपान्तर 'भागवत् दुष्टाचार' प्रतीत होता है।

माही नामक स्थान में तीन सामाजिक धाराएँ हैं - (1) तीय समाज, (2) एंग्लो इण्डियन समाज, (3) अन्य। 'तीय' केरल के हिन्दू समाज की एक उपजाति है। स्वतंत्रतापूर्व 'सवर्ण' लोगों द्वारा ठुकरायी हुई यह एक अवर्ण जाति थी। वे ग्रामदेवता 'आदितीयन' को अपना सर्वस्व मानते थे। सवर्णों से अपमानित होने पर दुःख दूर करने के लिए यह वर्ग अंग्रेज़ों व फ्रेंच समाज की ओर आकृष्ट हुआ। वेशभूषा तक में शिक्षित तीय पूरे पश्चिमी बन गये। दूसरा एंग्लो इण्डियन लोगों का समाज था, जो फ्रांसीसियों का भक्त था। वे स्थानीय और भारतीय परम्परा से घृणा-सी ही करते थे। शराब व फिरंगी सभ्यता का बड़ा शौक उन्हें था। 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' के दिनों में माही में एक नया वर्ग पनपा। वह था - दुबई-सभ्यतावाला समाज, पश्चिम एशिया जाकर धनार्जन करनेवाले युवक और उनके परिवार।

इसी युवा वर्ग में एक अल्पसंख्यक वर्ग आगे आया, जो साहस का धनी और कान्तिकारी मनोवृत्ति का था। पुराने रीति-रिवाज़ों को माननेवाली स्थानीय प्रौढ़ पीढ़ी, फ्रेंच सभ्यता को सर्वेश्रेष्ठ समझता समाज, भारतीय राष्ट्रीयता की अनुगामी पीढ़ी आदि का मिश्रित स्वरूप यहाँ बना। फिर भी माही की एक सर्वप्रिय वस्तु शराब है। देश के स्वतन्त्र होने के बाद का युग, उसमें उभरे सीमित वर्ग आदि इस उपन्यास के वर्ण्य विषय हैं।

मय्यषि़ के स्वतन्त्रता सेनानी हैं - ए.के. कुमारन। फेंच लोगों के जाने के बाद उन्होंने मदिरा - सभ्यता से मय्यषि़ को बचाने का प्रयत्न किया था। पर इसमें वे सफल नहीं हुए, क्योंकि वहाँ के युवक ही इसका घोर विरोध करते थे। मय्यषि़ के निवासियों के लिए जादूगर अनफोनसाच्चन सुपरिचित है। उसके छोटे परिवार में पत्नी मग्गि मदाम्मा, पुत्र मैक्किल तथा पुत्री एलसी हैं। एंग्लो - इन्डियन परिवार फ्रेंच शासन को स्वर्णयुग समझता है। अनफोनसाच्चन शराब के नशे में कहा करता है कि 'मैं मय्यषि़ का सृष्टिकर्ता हूँ'।

मय्यषि़ के कुञ्जिकुट्टि वैश्यर और मन्दियम्मा का बेटा है कुमारन। वह उस प्रदेश का उल्लेखनीय जनसेवक है। कुमारन वैश्यर (वैद्य) की आयुर्वेदिक औषधियों की एक दूकान है, पर अब वह चलती नहीं। मन्दियम्मा की सहायता के लिए वैश्यर ने अपने घर में माबी नामक एक नौकरानी रखी है। वैश्यर की दूकान के पास अस्सनार भी व्यापार करता है। गरीबी में दिन बितानेवाले उस परिवार की सहायता कुमारन वैश्यर ही करता है।

उपन्यास की कथा का आरंभ मय्यषि़ की स्वतंत्रता-प्राप्ति के पच्चीस वर्ष बाद से होता है। मैक्किल, चात्तु का बेटा धर्मपालन, करुत्तकण्णन का बेटा फलगुन जैसे युवक नौकरी की खोज में फ्रांस चले गये हैं। धोबिन कल्लू और उसका बेटा इन्द्रा गोरों के समय धूमधाम से जीवन बिताते थे। अब वे गरीबी में दिन काटते हैं। गरीब कुञ्चिरुता का बेटा माधवन कान्तिकारी है। एक क्रांति-विरोधी की हत्या के बाद तो पुलिस से बचाने के लिए कुमारन वैश्यर ने उसकी सहायता की और वह

दुबाई जाकर धन कमाने लगा, माँ को पैसे भेजने लगा। कुञ्चिरुता की गरीबी दूर हो गयी।

धर्मपालन और फलगुन भी फांस में धन कमाकर धनी बन गये। पुरानी झोंपड़ियों के स्थान पर बड़े-बड़े मकान बने। इस प्रकार मय्यषि के तीय लोग धन-सम्पन्न हो गये। किसी समय वहाँ गोरों के मित्र कुञ्जामन वकील का घर ही बड़ा था। गोरों के साथ कुञ्जामन वकील भी फ्रांस चले गये। पर उनके बेटे फ्रांस से मय्यषि लौट आये।

मय्यषि का एक चित्र यह भी है कि वहाँ का एक प्रमुख तीया आरूपुरयिल कंडुंगन 'आदितीय' (लोक देवता) के मन्दिर की देखभाल करता है, पर, उसका बेटा उसे धिक्कारता है। यह कंडुंगन से सहा नहीं जाता, उसे गोरों से घृणा है।

नौकरी की खोज में विदेश में पहुँचे सभी व्यक्ति घरों को बहुत धन भेजते थे। अलफोनसाच्चन का परिवार भी अब गरीबी में दिन बिता रहा था। धर्मपालन के दिये पैसे से मग्गिमदाम्मा घर का खर्च चलाती थी। शिवन, शशि और एलसी साथ - साथ स्कूल जाते थे। जब अलफोनसाच्चन और मग्गिमदाम्मा गिरिजाघर जाया करते थे। तब शशि एलसी को देखने केलिए आया करता था। इसी बीच मैक्किल बहुत अधिक धन और गहने लेकर आया। बड़ी धूमधाम के साथ कुछ दिन काटे। लौटते समय दूसरों से रुपया उधार लिया। कुछ दिनों के बाद मग्गिमदाम्मा को पता चला कि मैक्किल जो गहने लाया था, वे असली सोने के नहीं थे।

कुमारन वैश्यर ने माधवन की सहायता से अस्सनार के बेटे मूसा को दबाई भिजवा दिया, जिससे परिवार की गरीबी दूर हो गयी।

इसी प्रसंग में शिवन, शशि, एलसी आदि विभिन्न पात्रों के माध्यम से औपन्यासिक रोचकता बढ़ाने, कुमारन वैश्यर के चरित्र को अधिक चमकाने, शशि-एलसी के प्रेम-सम्बन्धों को सुलझाने तथा सामाजिक प्रतिक्रियाओं की चर्चा है। शिवन के क्रान्तिकारी बनने की कथा इसमें है। शिवन और उसके क्रान्तिकारी मित्रों द्वारा आरुपुरयिल कंडुगन की पिटाई का चित्रण, माधवन के घर में शरण, माधवन का शिवन को दुबई। भेजने का प्रबन्ध करना, क्रान्तिकारी शिवन का वहाँ से भाग जाना, आन्ध्रप्रदेश से उसे पकड़कर जेल भेजा जाना, कुमारन वैश्यर की मृत्यु, वैश्यर और परिवार के लिए जीवन समर्पित करनेवाली माँबी को बीमारी, एक अनाथ प्रेत के समान वैश्यर के घर में माँबी और शशि की रोचक कथा आदि भी इसमें है। कथा का बड़ा भाग पत्रकार कुंजिकण्णन के द्वारा कहलाया गया है।

उपन्यास का कथोपकथन सजीव, सहज और मार्मिक है। जनानुभूति, जन - जीवन, सामाजिक संबंधों, समस्याओं, प्रकृति-परिवेशों आदि के चित्रण में मुकुन्दन ने आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है। आवश्यतानुसार विश्लेषण, विवेचन, विक्षेप, व्यंग्य आदि मिल जाते हैं। उपन्यास के अराजक विश्व में काव्यात्मक शैली, लोककथाओं की छौंक, कथा-विन्यास-पद्धति आदि ने उपन्यास को रोचकता प्रदान की है।

इसमें एक जादूगर के स्वप्नलोक और विह्वलता की कथा है। पहले जादूगर से शराबी बनना और उससे जुड़ी विह्वलता है गौण पात्र अलफोनसाच्चन की। विभिन्न रंगों को समन्वित करके ही अच्चन का चित्रण किया गया है। अच्चन और परिवार के वातावरण तथा

व्यवहार में ट्रैजड़ी ही ट्रैजड़ी भरी हैं। इसका चित्रण प्रभावी भी है।

इस उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र है कुमारन वैश्यर जो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, सब की सहायता करनेवाला है। विधि की विडम्बना कहिये कि नव धनाढ्य समाज में उसे शांति से मरने का अवसर भी नहीं मिला।

अपने 'मय्यषिपुष़युटे तीरड्ङळिल' उपन्यास के दूसरे भाग के रूप में ही मुकुन्दन ने 'दैवत्तिन्टे विकृतिकळ' लिखा है। इसमें एक इतिहास के समान देश तथा काल की कहानी कही है।

इस प्रकार आश्चर्यपूरित आकाश तथा प्रकृति के निष्कलंक मन की व्याख्या करनेवाले मुकुन्दन की सबसे प्रौढ़ रचना है 'दैवत्तिण्टे विकृतिकळ'। अपने जादू के दंड से आश्चर्यचकित कार्य करनेवाले तथा आकाश एवं समुद्र के ऊपर मय्यषि के सूर्य को छिपानेवाले अलफोनसाच्चन नामक जादूगर की सृष्टि करनेवाले मुकुन्दन 'मय्यषि पुष़युटे तीरड्ङळिल' नामक उपन्यास को यहाँ पूर्णता देते हैं।

उपन्यास की सफलता के अनेक बिन्दु हैं। एक है जीवन्त पात्रों का यथार्थवादी चरित्र -चित्रण। दूसरा है किशोर मनोविज्ञान का सरस चित्रण। तीसरा है नाटकीय प्रसंगों की सशक्त अवतारणा। चौथा है प्रभावशाली संवाद, सो भी आँचलिक भाषा में। पात्रों की परिकल्पना व नाम तक आँचलिक है। इससे पाठक ऐसा अनुभव करते हैं कि वे स्वयं मय्यषि जाकर वहाँ का और वहाँ के जनजीवन का साक्षात्कार कर रहे हैं।

◆ पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
श्रीनारायण कॉलेज, कोल्लम जिला।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.19 के आगे)

6.'नलिनी' काव्य का हिन्दी में अनुवाद किसने किया?

(अ) पी.जी. वासुदेव (आ) अभयदेव

(इ) पी.नारायण (ई) उल्लूर

7.'कुरुक्षेत्रम्' काव्य के कवि कौन हैं?

(अ) अय्यप्प पणिक्कर (आ) आशान

(इ) वल्लत्तोल (ई) उल्लूर

8.'इरुपतां नूट्टाण्टिन्टे इतिहासम्' किसकी रचना है?

(अ) उल्लूर (आ) अक्कित्तम

(इ) आशान (ई) ओ.एन.वी

9.'इरुपतां नूट्टाण्टिन्टे इतिहासम्' का हिन्दी अनुवाद किसने किया?

(अ) अभयदेव (आ) मूत्ततु

(इ) डॉ.वे.के.हरिहरन उण्णित्तान

(ई) प्रो.डी.कृष्णन नंपियार

10.'स्वयंवरं' काव्य का हिन्दी अनुवादक कौन है?

(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

(आ) डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

(इ) प्रो.पी.माधवन पिल्लै

(ई) ई.के.दिवाकरन पोट्टी

(शेष पृ.सं. 37)

मलयालम साहित्यः 1920 तक

♦ मूलः जी शंकर कुरुप, अनुवाद :डॉ.सी.शान्ति

इस विशाल भूविभाग की भाषाओं की विविधता के बारे में भाषण देना, विशेषकर आज़ादी के बाद एक फैशन बन गया है। लोग हमेशा इस बहुमुखत्व की विविधता पर ही ज़ोर दिया करते हैं। लेकिन, सचमुच हमें उनके समान स्वभाव पर ही ध्यान देना चाहिए, जो एक रत्न के विभिन्न पहलुओं की तरह है। भाषा के इस वैविध्य में रहनेवाली एकता देखने और समझने में हम कभी नहीं हारें। लेकिन आज भाषा पर आधारित जो संकुचित दृष्टिकोण प्रचलित हैं, वे हमारी हार के प्रमाण हैं। प्रादेशिक तौर पर, संकुचित स्वत्व-भाव प्रबल होता जा रहा है। उन उपयोगशून्य घासों के बीच धान की मंजरी कैसे बढ़ पायेगी? अगर आज हम ईमानदारी के साथ देश का पुनर्निर्माण और सांस्कृतिक उद्ग्रथन करने की इच्छा करते हैं तो उन घासों को उखाड़ फेंकने में विलंब हो गया है। शिथिलीकरण की प्रवृत्तियों को कभी स्थान न दें। इस मामले में विजय पाने के लिए, हमें अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन में भाषाओं के निर्णायक स्थान का महत्व समझना ही पड़ेगा। भाषा एक जनता के आन्तरिक जीवन का बहिःस्फुरण है। सभी भारतीय भाषाओं को चेतना देनेवाली आत्मशक्ति एक ही है। उन सबमें एक ही हृदय स्पंदित होता है। युगों से विकसित भारतीय आत्मा हर भारतीय भाषा में प्रकाशित हुई है। मुझे भरोसा है कि 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की रजत जयन्ती के समारोह में भाग लेनेवाले विभिन्न भाषाओं के प्रतिनिधि इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित रखें।

फिलहाल मद्रास में एक दिन तमिलनाडु के कुछ प्रमुख साहित्यकारों के साथ बातचीत करने का मुझे मौका मिला। उन्होंने तमिल में और मैंने मलयालम में बातें की थीं। फिर भी हम दोनों के विचार-विनिमय में तनिक भी कठिनाई नहीं हुई। हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि तमिल और मलयालम के समान आपसी समानता रखनेवाली अन्य भाषाएँ ज़्यादा नहीं मिलेंगी। लेकिन तेलुगु और कन्नड़ करीब उनके समान आपस में निकटता रखनेवाली भाषाएँ हैं। उत्तर की भाषाओं में भी ऐसी समानताएँ पायी जाती हैं, जैसे - असमिया, बंगला और उड़िया भाषाएँ। उत्तर में एक ही मूल से उत्पन्न भिन्न - भिन्न प्राकृतों से विकसित भाषाएँ तथा एक ही मूल द्रविड़ भाषा की शाखा के रूप में विकसित दक्षिणी भाषाएँ भारत के सांस्कृतिक शरीर के फेफड़े हैं। आर्य, द्राविड़ संस्कृतियों के सम्मिश्रण के रूप में भारतीय संस्कृति विकसित हुई और उनके रंग, रूप और चेतना पायी। उत्तर की भाषाओं के समान ही, दक्षिण की भाषाओं में भी तत्सम या तद्भव के रूप में संस्कृत के शब्द मिले हुए हैं। यह बात सोचने से भी भाषापरक संकुचित दृष्टिकोण और शिथिलीकरण की प्रवृत्तियों को छोड़ने में मदद मिलेगी। हम समझ सकते

हैं कि भाषापरक विविधता केवल बाहरी है और अन्दर की ओर घुसने पर भारत की आत्मा एक, और अखण्ड़ दृष्टिगत होती है। मेरी मातृभाषा मलयालम और तमिल की निष्पत्ति एक ही मूल भाषा में हुई है। मलयालम तमिल की बेटी है या बहिन है, और बहिन तो बड़ी बहन या छोटी बहिन - ऐसे सवालों का फैसला भाषाशास्त्र के पण्डित ही करें। वह संबंध चाहे जैसा भी हो, एक बात निश्चित है, तमिल में साहित्य के पनपने, बढ़ने और विकसित होने के बाद सेवा - शुश्रुषा में तत्पर कितने ही हाथों की सिंचाई और पालन - पोषण के फलस्वरूप चेर, चोल और पाण्ड्य साम्राज्यों की ओर शाखोपशाखाएँ फैलाने के बाद ही मलयालम साहित्य निजी व्यक्तित्व से युक्त साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुई। प्रारंभिक खण्ड़ों के परखने पर मालूम होता है कि तमिल का मूल जो है वही मलयालम का भी है। मलयालम के प्राचीन काव्यों में आनेवाले 'रामचरितम्' में इसके लिए आवश्यक प्रमाण मिलते हैं।

किन्तु एक बात पर विश्लेषण करना ज़रूरी है - क्या 'रामचरितम्' में दिखायी पड़नेवाली भाषा किसी भी ज़माने में केरल की व्यावहारिक भाषा रही? नहीं रही, यही मेरा मत है। क्योंकि उसी ज़माने में 'मणिप्रवाळम्' शाखा में रची गयी कृतियों और लोकगीतों में एक अलग भाषा - शैली मिलती है। इससे हम इसी निर्णय पर पहुँच सकते हैं कि मणिप्रवाळम् और गीत इस देश की मौलिक भाषा से, एक ही समय विकसित समानान्तर साहित्यिक आन्दोलन हैं। उस मूलभूत भाषा के व्याकरणिक नियम आदि दृढ़ नहीं हुए थे। देशभेद के अनुसार उस भाषा के कई रूप और भाव थे। शायद कुछ प्रदेशों की भाषाएँ दूसरे कुछ प्रदेशों की भाषाओं से पहले विकसित हुई थीं। जिस प्रकार उत्तर भारत की पुरानी विभिन्न प्राकृत एक - एक देश की भाषा के रूप में परिणत हुईं, उसी प्रकार सह्याद्रि के प्रश्चिम की ओर फैले हुए इस भूविभाग की कभी प्रादेशिक भाषाएँ मिलकर कालक्रम से मलयालम नामक एक भाषा बनी होगी। उस ज़माने में व्याकरण संबन्धी या शैलीपरक नियम नहीं बने होंगे। शायद साहित्यिक भाषा के विकास के बाद ही वे सब बने होंगे।

यद्यपि केरल में एक स्वतन्त्र भाषा विकसित हुई, यह प्रदेश चेर साम्राज्य का एक हिस्सा होने के कारण तमिल ही दफ़्तरी भाषा और शिक्षित लोगों की भाषा थी। उस ज़माने के कवि तमिल में कविता - रचना करते रहे। संस्कृत से प्रेरणा पाकर कवियों का एक दल संस्कृत में कविता करता था। अब भी प्रचलित अनेक कृतियाँ उस ज़माने की रचाओं में आनेवाली हैं। 'मणिमेखला', 'चिलप्पतिकारम्', 'पतिट्टुप्पत्तु' आदि तमिल काव्यों में केरल की शैली और प्रयोग प्राप्त हैं, इस बात में संदेश नहीं कि वे तमिल की कृतियाँ हैं, मलयालम की क्लासिक कृतियाँ नहीं हैं।

आर्य वर्ग के नंपूतिरी ब्राह्मणों का केरल में निवास शुरू करने से, यहाँ प्रचलित सामाजिक गतिविधियों से उनके मेल पाने से दूरव्यापी परिणाम हुए। वह एक अनुपम सांस्कृतिक क्रान्ति थी। नंपूतिरियों की व्यावहारिक भाषा संस्कृत नहीं रही होगी, तो भी संस्कृत भाषा और साहित्य में पाण्डित्य पाये हुए लोग बहुत ज़्यादा थे। इसलिए इस देश की जनता के जीवन और भाषा को गहरे रूप से प्रभावित करने में वे सफल हुए। संस्कृत में पाण्डित्य प्राप्त करना सांस्कृतिक विकास के निशान के रूप में माना गया। अभिजात वर्ग के लोग संस्कृत

पढ़ने और उसके पाण्डित्य के द्वारा सम्मान प्राप्त करने भी लगे। इस नये उत्साह का साहित्यिक परिणाम बहुत व्यापक था। केरल के सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में यह प्रवृत्ति अपनी छाप लगा सकी है। केरल के मानसिक जीवन और भाषा में यह प्रतिबिंबित हुआ है।

जनता की व्यावहारिक भाषा में धीरे-धीरे संस्कृत प्रवेश पाने लगी। घुसपैठ की यह बात शायद ही लोगों को मालूम थी। जो भी हो, साधारण आदमी की भाषा को एक नयी शाखा के रूप में बदलते रहने की बात बाहर प्रकट नहीं हुई। क्योंकि यह विकास उतना स्वाभाविक और क्रमिक था। संस्कृत के प्रभाव से मलयालम में एक नयी चेतना फैल गयी। मलयालम की गठन में बिल्कुल क्रान्तिकारी परिवर्तन आये। इस संदर्भ में, मैं एक बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ। यद्यपि क्रान्तिकारी परिणाम हुए, तो भी भाषा और व्याकरण अपना व्यक्तित्व छोड़े बिना आगे बढ़ते रहे। व्याकरणपरक गठन की दृष्टि से आज भी मलयालम की समानता तमिल से है, संस्कृत से नहीं।

आठवीं सदी ईसवीं राजनीतिक परिवर्तनों और नवजागरण का ज़माना था। उसके फलस्वरूप पश्चिमी किनारे की जनता में एक हद तक सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता स्थापित हुई। उस ज़माने के प्रारंभिक दशकों में केरल में एक नयी वर्ष गणना प्रचलित हुई। पूरे भारत को दृष्टि में रखें तो यह एक अनुपम घटना थी। उसी ज़माने में आचार्य शंकर 'अद्वैत सिद्धान्त' का प्रचार करते हुए भारत में इधर-उधर चल रहे थे। उसी ज़माने में दूसरे चेरवंश की स्थापना हुई। संक्षेप में, उसी समय केरल के सांस्कृतिक व्यक्तित्व पर दूसरों का ध्यान केन्द्रित रहता था।

इसी ज़माने में मलयालम की वर्णमाला विपुल बनायी गयी। तब तक तमिल की वर्णमाला ही अपनायी जाती थी। मणिप्रवालम आन्दोलन के विकसित होने पर और भी विपुल वर्णमाला की ज़रूरत महसूस हुई। शायद उसी समय संस्कृत की वर्णमाला मानी गयी होगी और उसमें द्रविड़ वर्णों को जोड़कर मलयालम की वर्णमाला विकसित हुई होगी। मलयालम साहित्य का इतिहास भी यहाँ से शुरू होता है।

कुछ धार्मिक गीतों और लोकगीतों में इस प्रारंभिक काल की साहित्यिक गतिविधियों की छापें दिखायी पड़ती हैं। पीढ़ियों से होकर चले आने के बाद, बिना उतने बदलावों के, आज भी वे जीवित हैं। उनमें बहुत कुछ संगृहीत नहीं हुए और प्रकाशित भी नहीं हुए। मलयालम में 'क्लासिक' विशेषण के योग्य एक कृति के उत्पन्न होने के लिए लगभग चार या पाँच सदियाँ लग गयीं। 'रामचरितम्' उनमें ज्ञात कृतियों में सबसे प्राचीन है।

या तो बारहवीं सदी के अंत में या तेरहवीं सदी के आरंभ में 'रामचरितम्' की रचना हुई थी। जैसे पहले कहा गया, वह गीत शैली में आनेवाला एक काव्य है। फिर भी मणिप्रवाळम आन्दोलन का प्रभाव उसमें भी दिखायी पड़ता है। जब चेर और चोळवंशों के बीच लड़ाई चल रही थी तब उसकी उत्पत्ति हुई थी। वह उस ज़माने के स्वभाव का द्योतक भी है। शायद जनता के युयुत्सु भाव को उत्तेजित करना ग्रन्थकर्ता का उद्देश्य था। रामायण के युद्ध काण्ड को उन्होंने विषय के रूप में लिया था। केरलीय साहित्य के विकास के इतिहास में 'रामचरितम्' का महत्व दो प्रकार का है। यद्यपि

तमिल काव्यों के अनेक संप्रदाय उसमें हैं, तो भी वह तमिल से मुक्त होकर एक नया साहित्य निर्मित करने का पहला कदम है। जिन द्रविड़ छन्दों का विकास बाद में हुआ और जो बाद के कवियों द्वारा बड़े पैमाने पर स्वीकृत हुए, उनमें अधिकांश छन्दों का प्रारंभिक रूप इन काव्यों में दिखायी पड़ता है। इस काव्य में प्रयुक्त तमिल शब्दों की भरमार साहित्य के इतिहास के विद्यार्थी को ध्यान देने योग्य दूसरी बात है। क्योंकि ये शब्द शब्दशास्त्र के अनुसार होनेवाले विकारों के साथ बाद के मलयालम के कवियों के शब्द भण्डार में मिल - जुल गये थे। आज की मलयालम की शब्द - संपत्ति के लिए वे एक महत्वपूर्ण पूँजी बन गये।

लगभग इसी समय, करीब इसके समानान्तर एक दूसरी साहित्यिक शाखा विकसित हुई। इसे प्राचीन मणिप्रवाळम कहते हैं। इसमें संस्कृत - विभक्ति में अन्त होनेवाले शब्द भी स्वतंत्र रूप से संस्कृत से उधार लेकर वे प्रयुक्त करते थे। इस शाखा की ज्ञात कृतियों में सबसे प्राचीन कृति 'उण्णियाटि चरितम्' है। 'उण्णियच्ची चरितम्', 'उण्णिच्चिरुतेवी चरितम्' आदि इस वर्ग की दूसरी कुछ कृतियाँ हैं। साहित्य की दृष्टि से इनमें कई खूबियाँ हैं। 14 वीं सदी के पहले दशक में रचित 'उण्णुनीलि सन्देशम्' इस धारा में रचित कृतियों में से सबसे सुन्दर और प्रौढ़ है। 'कोक सन्देशम्' आदि कुछ कृतियाँ भी इसके अनुकरण के रूप में रची गयी हैं।

मणिप्रवाळम साहित्य ने इतना विकास पाया कि वह व्याकरण और अलंकार - शास्त्र को अपनाने योग्य बन गया। इसके फलस्वरूप 'लीलातिलकम' की उत्पत्ति हुई। उसकी रचना संस्कृत में हुई थी। उस ज़माने की विभिन्न मणिप्रवाळम कृतियों से इसमें उदाहरण उद्धृत किये गये हैं। उनमें अधिकांश कृतियाँ उपलब्ध नहीं हैं। यह निश्चित है कि उस काल में मणिप्रवाळम धारा संपन्न हो चुकी थी। मलयालम भाषा जो संस्कृत - पद - संपत्ति अपना सकी, वह तो उसीकी देन है। प्राचीन महाकाव्यों के प्रभाव की दृष्टि से अन्य युगों का सामान्य स्वभाव रखते हुए भी मणिप्रवाळम धारा प्रायः उससे अलग खड़ी है, यह बात ध्यान देने योग्य है।

गीत, मणिप्रवाळम इन दो विधाओं के द्वारा जान-बुझकर किये गये साहित्यिक प्रयत्नों की सरणियाँ प्रवाहित हुईं, लेकिन हम अनुमान कर सकते हैं कि और एक सरणी भी थी जो इनकी तरह उतनी प्रकट नहीं थी - वह है इन दो धाराओं की चेतना और स्वभाव लिये हुए लोकगीत और जनता की भाषा। इन तीन प्रवाहों के एकत्रित होने की त्रिवेणी से 'कृष्णगाथा' की उत्पत्ति हुई।

ध्यान देने योग्य दूसरा चरण वह है जो 15 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकट हुए 'निरणम' कृतियों का ज़माना है। 'निरणम' कवियों ने गीत - शैली स्वीकार की और संस्कृत शब्दों को तत्सम रूप में निस्सन्देह प्रयुक्त भी किया। रामायण, भारत, भागवत, भगवद्गीता आदि ने आदारित करके उन्होंने अपनी क्लासिक रचनाएँ लिखीं। ऐसे तीन कवि मिलते हैं। भारत के प्राचीन महाकाव्यों और दर्शनों को केरल के साहित्य में रूपान्तरित करने के लिए यत्न करनेवालों में ये प्रायः स्मरणीय हैं। आज की भाषा से भिन्न होने के कारण ये कृतियाँ आज ज़्यादा लोग नहीं पढ़ते, तो भी कलात्मक श्रेष्ठता की दृष्टि से वे अत्यधिक उत्कृष्ट हैं। वे प्राचीन क्लासिक कृतियों में शीर्षस्थ हैं।

'रामचरितम', 'मणिप्रवाळम' आदि के समय

और निरणम कृतियों के बीच का काल मलयालम साहित्य के विकास का पहला स्पष्ट चरण है। गीत और मणिप्रवाळम के प्रवाह निरणम कृतियों में सम्मिलित होते हैं। निरणम कृतियों के तुरन्त बाद रची हुई कृष्णगाथा, पहले उल्लिखित तीसरे प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती है।

ऐसा माना गया है कि 15 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में 'कृष्णगाथा' की रचना हुई। इस बात पर तर्क नहीं हो सकता कि मलयालम भाषा का आत्मचैतन्य पहली बार इसी कृति में प्रकाशित हुई थी। यद्यपि उसकी रचना 'भागवत' के 'दशम स्कन्ध' के आधार पर हुई है, तो भी इसे एक अत्यधिक सुन्दर, सरल और स्वतंत्र काव्य मान सकते हैं। वह तो कोरा अनुवाद नहीं, कृष्णकथा का संग्रह भी नहीं। केरल का अनुस्मरण करनेवाले रंगों और दृश्यों का भावुक वर्णन उसमें है। वह काव्य - कल्पना की संपन्नता और रंगीले शब्द चित्रों से मोहक है। नंपूतिरियों के हास्यबोध के उसमें आदि से अंत तक उदाहरण मिलते हैं। उन सबसे परे, वह कृति एक गौरवपूर्ण, प्रौढ़ रचना है। वह एक लंबा काव्य है जिसमें छः सौ छापे हुए पृष्ठ मिलते हैं। उसकी भाषा जनता की साधारण भाषा के बहुत निकट है। छोटे क्लास में पढ़नेवाला स्कूल का बच्चा भी वह समझ सकता है। ऐसा नहीं लगता कि यह पाँच शताब्दियों से पूर्व रची हुई है।

'कृष्णगाथा' की-सी भाषा साहित्य-रचना में स्वीकृत होने लगी, फिर भी मणिप्रवाल साहित्य ज़ारी रहा। पुनम नंपूतिरी सामूतिरी के सदस्यों में एक थे जो बाद के मणिप्रवालम कवियों में प्रमुख हैं। पुनम एक महान कवि थे। उन्नत साहित्य के लिए आवश्यक मुख्य गुण उनकी काव्यकला में मिलते हैं।

और भी कई कवि हैं, जिन्होंने मणिप्रवाळम साहित्य का पोषण किया।

कृष्णगाथा और पुनम कृतियों के काल के बाद मलयालम के साहित्य - गगन में एक महान उदय हुआ। वह एक अदुभुत चमत्कार था। तुञ्चत्तु एषुत्तच्छन के काव्य जीवन का यहाँ उल्लेख है। वे एक अप्रतिम प्रतिभावाले कवि थे। उन्होंने मलयालम को एक परिपक्व भाषा के रूप में बदल दिया। वे मलयालम कविता को जनता के बीच लाये। 'मलयालम में प्राचीन महाकाव्यों का अनुवाद करनेवालों में सबसे श्रेष्ठ कवि' - यह जो विशेषण उनके बारे में प्रयुक्त है, उनकी सभी क्षमताओं को प्रकाशित नहीं करता। उस विभाग के अन्य कई कवियों से वे कितने ही ऊँचे थे। मलयालम की और मलयालम छन्दों की गेयता को उन्होंने ही पूर्ण रूप से अनावृत किया। मणिप्रवाळम के समान गीतों में भी संस्कृत के पदों को उन्होंने समृद्ध रूप से स्थान दिया। फिर भी मौलिक रूप से लालित्य की रक्षा करने में उन्होंने बड़े हद तक सफलता पायी। आज तक जनता के कवि के रूप में उनके प्रतिष्ठित होने का रहस्य भी वही है। दार्शनिक मूल्यों से संपन्न उन कृतियों ने भविष्य की पीढ़ियों को अत्यधिक प्रभावित किया।

एषुत्तच्छन ऐसे भक्त कवियों में से एक थे, जिनका विश्वास था कि भक्ति के अलावा मुक्ति का कोई उपाय नहीं। इस विषय में वे चैतन्य, रामानुज, जयदेव आदि कवियों के समशीर्ष हैं। यही विश्वास प्रचलित है कि वे सोलहवीं शताब्दी में जीवित थे।

उनकी 'अध्यात्म रामायणम्', 'महाभारतम्', 'कैवल्य नवनीतम्', 'हरिनामकीर्तनम्' आदि आज भी

मलयालम की उत्तम रचनाओं में आती हैं। केरल में कौन - सा हैन्दव भवन है, जिसमें इन कृतियों में से किसी एक की भी प्रति नहीं होगी?

मणिप्रवाळम के ज़माने की कृतियों ने एषुत्तच्छन को प्रभावित किया होगा। लेकिन उन्होंने ही मणिप्रवाळम भाषा को नयी क्षमता और चैतन्य देकर उसे इस प्रकार विकसित कराया कि वह विश्व संस्कृति और साहित्य के लिए एक पूँजी बन गयी। ऐसा कह सकते हैं कि साहित्य को आम आदमी के आस्वादन के योग्य बनाने के लिए उन्होंने जान - बूझकर प्रयत्न किया। असमानताओं के विरुद्ध लड़ने के लिए उसे सक्षम बनाना उनके लक्ष्यों में एक था। यह निश्चित है कि असमानता की जो बुराइयाँ कायम थीं, वे उन्हें दुःख देती थीं। ऐसा केरलीय नहीं होगा, जो उस महान आचार्य का नाम सुनते ही सिर न झुकाये।

उस काल में अनेक प्रभु और राजा केरल का शासन करते थे। पुर्तगालियों और डच लोगों के यहाँ आने और रोब जमाकर चले जाने के बाद अंग्रेज़ तथा फ्रेंच यहाँ आपस में स्पर्धा करने लगे। अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में दक्षिण में मार्ताण्डवर्मा, और उत्तर में सामूतिरी ने केरल देश को एक ही छत्र के नीचे लाने की कोशिश की। एक ओर से अंग्रेज़ों की और दूसरी ओर से फ्रेंच की सहायता पाकर मैसूर के टिप्पू ने टाँग अड़ायी। इसलिए एकीकरण संभव नहीं हुआ। अंग्रेज़ों के हथियारों का बल मैसूर को पराजित कर सका। क्रमशः उन्होंने भारत में अपना अधिकार भी जमाया। उसके फलस्वरूप केरलभूमि तिरुवितांकूर, कोच्ची तथा ब्रिटिश शासन के अधीन रहनेवाला मलबार - इन तीन खण्ड़ों में विभक्त हुई। इन राजनीतिक परिणामों से साहित्यिक विकास के क्षेत्र में जो-जो आघात और प्रभाव हुए, उनको दृष्टि में रखने पर ये सार्थक हैं, इसलिए इसका विशेष उल्लेख किया जाता है।

अठारहवीं शताब्दी के बीच के दशक राजनीतिक उथल - पुथल और अधः पतन का युग था। उस ज़माने में जीवित कुंचन नंपियार समाज के एक आलोचक तथा हास्य कवि थे। उनकी अभिव्यंजना शैली सरल, नवीन और समकालीन सामाजिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करनेवाली थी। 'तुळ्ळल' नामक एक नये कलारूप को उन्होंने अवतरित किया। वे केरल की काव्य भाषा को प्रायः एक अच्छे स्तर पर पहुँचा सके। वे बोलचाल को बहुत हद तक साहित्यिक भाषा में मिला सके और उनमें साहित्यिक क्षेत्र के मान का आवाहन भी किया। कविता के, जनसाधारण के ज़्यादा निकट आने के लिए यह कारण बन गया। आज भी नंपियार सबसे अधिक प्यार और आदर पानेवाले जनकवि हैं। वे साठ से अधिक कृतियों के रचयिता हैं, जनता की जीभ पर नाचनेवाले कवि भी।

'तुळ्ळल' तो एक प्रकार का एकाभिनय है। कुंचन नंपियार के तुळ्ळल का, केरल की एक छोर से दूसरी छोर तक अभिनय हुआ है। उनके काल के बाद लगातार कई लोग अभिनय तो करते रहे। आज भी जनता के बीच तुळ्ळल के प्रचार की कमी नहीं।

सत्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में कथकली एक नवीन कलारूप के रूप में विकसित हुआ। उसका अपना एक संपन्न साहित्य है। उण्णायिवारियर और कोट्टयत्तु तंपुरान इस विधा के शीर्षस्थ व्यक्ति हैं। कथकली नामक कलारूप का प्रचार बढ़ता आ रहा है - केरल के अन्दर और बाहर। विदेशों में भी उसका

'केली वादन' (ख्याति) व्याप्त है।

हम देख सकते हैं कि अठारहवीं सदी के मध्यकाल से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्यकाल तक का युग साहित्य के परिपोषण के लिए उतना अनुकूल नहीं हुआ होगा। नंपियार के बाद वह अंधेरा भरा ज़माना गायब हो गया।

लेकिन उन्नीसवीं शती के मध्यकाल से लेकर एक नया जागरण हुआ। ऐसा देख सकते हैं कि तब प्राचीन संस्कृत की कृतियों से एक नया लगाव विकसित हुआ। उसके कारण अनेक अनुवाद हुए जिन्होंने साहित्यिक संपत्ति बढ़ायी। यह जनता में भारतीय संस्कृति की संपन्न परंपरा का अवबोध लाने का भी कारण हुआ। केरलवर्मा वलिय कोयितंम्पुरान, राजराजवर्मा, कोट्टुङ्ङल्लूर कुञ्ञिक्कुट्टन तंपुरान आदि इस युग के नेता हैं। उनके सहवर्त्तियों, मित्रों, अनुयायियों से भरी एक बड़ी कविसभा और पण्डित मण्डली भी उस समय सजीव रूप से काम कर रही थी। अनुवादों के अलावा, संस्कृत के काव्य तथा नाटक की कृतियों के अनुवादों के रूप में हुई स्वतंत्र मलयालम कृतियाँ भी बहुत रची गयीं। उसी ज़माने में एक दर्जन से ज़्यादा स्वतंत्र महाकाव्य रचे गये।

बीसवीं सदी मलयालम साहित्य के सर्गात्मक कर्मों की दृष्टि से, घटनाओं से भरी और ऊर्जा भरी हुई है। सभी शाखाओं में अनेक कृतियाँ रची गयीं। उनकी विस्तृति की ओर अब मैं प्रवेश नहीं करता। इन छः दशकों में जो साहित्यिक विकास हुआ और विभिन्न आंदोलन हुए, उनका अगर वर्णन करना है; और उनके नेताओं, कवियों और ग्रन्थकारों के बारे में संक्षेप में कहना है तो इस सीमित भाषण में संभव नहीं। फिर भी कवित्रय के संबंध में बताना ही पड़ेगा। आशान, वळ्ळत्तोल और उळ्ळूर उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में ही कवि बन चुके थे। उनकी प्रतिभा का परिपूर्ण विकास इस सदी के आदिम दशकों में हुआ। मलयालम साहित्य को आज की स्थिति में पहुँचाने के लिए उनकी प्रतिभा के चमत्कार ने जो देन दी, वह उतनी कम नहीं।

इनमें आशान को मलयालम के रोमान्टिसिज़म धारा का प्रवर्तक मानते हैं। उन्होंने शास्त्रीय तत्वों से भरे काव्य रूपों से प्रकृति और जीवन की ओर कवियों का ध्यान आकृष्ट किया। नवीन शाद्वल भूमियों की ओर उन्हें ले गये। उनकी अन्तिम कृतियों का सामाजिक महत्व ज़्यादा है। अलंकारों की जटिलता को दूरकर उन्होंने कल्पना की नयी चेतना को प्रतिष्ठित किया। वे ऐसे ऊँचे आयामों की ओर उड़ गये जहाँ कवि अब तक नहीं पहुँचे थे।

अपने काल्पनिक खण्डकाव्यों के द्वारा एक नयी धारा बहाकर वळ्ळत्तोळ एक गीतिकाव्य रचयिता के रूप में आगे बढ़े। उनके सरल, कोमल और अत्यन्त सुन्दर गीत केरलीयों के लिए सबसे प्यारे हैं। भारत के राजनीतिक आन्दोलन में जब गाँधीजी का आविर्भाव हुआ, तब वल्लत्तोळ की कविता ने एक नया उन्मेष पाया, एक शुभ लक्ष्य पा लिया। उनके गीत और काव्य स्वतंत्रता की कामना और देश प्रेम से इतने भरे हुए थे कि वे राष्ट्रीय नवोत्थान का एक प्रतीक माने गये।

स्वभाव और अभ्यास से उळ्ळूर एक क्लासिसिस्ट हैं। फिर भी, वे भी रोमान्टिसिज़म के मोह से मुक्त नहीं हुए। उनकी लघु कृतियों और गीतों में उसके अनुरणन

हैं। लेकिन वे प्रायः क्लासिक प्रवृत्तियों से भरे हैं। आज की पीढ़ी को प्राचीन भारतीय संस्कृति का सन्देश समझाने को वे अत्यधिक उत्सुक थे। उनसे केरलीय साहित्य को एक महान पूँजी मिली है।

नयी काल्पनिक चेतना साहित्य की अन्य शाखाओं की ओर बही। उपन्यास, कहानी, गद्य, नाटक, निबंध, हास्य साहित्य आदि में कितने नये-नये विकास हुए! हर शाखा में सृजनात्मक क्षमता से अनुगृहीत कई साहित्यकार आये। मलयालम कविता और मलयालम कहानी किसी भी अन्य भारतीय साहित्य और आन्दोलन से ज़रा भी निम्न स्तर की नहीं।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों में आये परिवर्तन हमारे साहित्य में भी नयी चैतन्य - धारा जगाने के कारण हो गये। नये-नये विचार आ गये। प्रश्नों को सुलझाने के नये उपाय आये। भारतीय साहित्य के कोमनवेल्थ में मलयालम को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए इसने भी मदद की।

आज की पीढ़ी की देन के बारे में मैं ने कुछ भी नहीं कहा है। वह तो इतना व्यापक है कि दूसरे लेख के योग्य विषय बन सकता है।

(यह 1961 अक्तूबर में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की 'रजत जयन्ती' के सिलसिले में तृश्शिनापिल्ली में संपन्न सभा में जी.शंकर कुरुप द्वारा किये गये भाषण का हिन्दी अनुवाद है।)

◆ अनुवादक :-
'देवीकृपा', जयप्रकाश लैन
शंकरंकुलङ्ङरा, पी.ओ. पुन्कुन्नम,
तृश्शूर 2, केरल।

श्रीकुमारन तंपी- कवि और गीतकार

(पृ.सं.15 के आगे)

श्री गोपालकृष्णन तंपी का एक कविता संकलन बारह वर्ष की आयु में प्रकाशित हुआ था। इन साहित्यकार भाइयों के छोटे भाई श्रीकुमारन तंपी ने विविध विधाओं में मलयालम में साहित्य-रचना की है। छोटा भाई प्रसन्नवदनन तंपी सोफ्ट्वेयर इंजीनियर हैं। बहन तुलसीबाई सबसे छोटी हैं। तंपीजी की चर्चित रचनाएँ हैं - कवियुं मालाखमारुं, एंजिनियरुटे वीणा, नीलत्तामरा, एन मकन करयुंपोल, शीर्षकमिल्लात्त कवितकल, अच्छन्टे चुंबनं, अम्मक्कोरु ताराट्टु आदि कविता संकलन; ओमनयुटे ओरु दिवसं (बाल कविता संकलन); अम्पिलि अकलेयाणु (कहानी संकलन); काक्कत्तंपुराट्टी, कुट्टनाटु, अच्चुतण्टु, कटलुं करयुं, ञान ओरु कथा परयां (उपन्यास); प्रेमनज़ीर एन्न प्रेम गानं (संस्मरण); सिनेमाः कणक्कुं कवितयुं (सिनेमा पर पुस्तक); आत्मकथयिले पेण्मनसुकल (आत्मकथा); हृदय सरस (चुने हुए 1001 गीतों का संकलन) आदि। 'हृदय सरस' के चार संस्करण प्रकाशित हुए हैं। तंपीजी की पहली कहानी है 'तोमाच्चा, नी एन्ने मरक्कुमो?', जो एक बार अपना प्रिय दोस्त श्री पी.एन.थोमस के रूढ़ने के दुःख में लिखी गयी थी। तंपीजी के सदाबहार सिनेमा गीत कई हैं। उनमें से कुछ हैं– 'चान्द्रिकयिललियुन्न चन्द्रकांतं', 'हृदय सरसिले प्रणय पुष्पमे', 'स्वन्तमेन्न पदत्तिनेन्तर्थम्', 'वैक्कत्तष्टमि नालिल ञानोरु' आदि। गानं (1979), मोहिनियाट्टं (1975), वेनलिल ओरु मष़ा (1979), नायाट्टु (1980), इटिमुष़क्कं (1980), आक्रमणं (1981), इरट्टि मधुरं (1981), अम्मक्कोरुम्मा (1981), मुन्नेट्टं (1981),

(शेष पृ.सं. 43)

डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन

♦ डॉ. सौम्या वी.एम

'केरल राज्य' अनेक वीर योद्धाओं की जन्मभूमि है। हिन्दी साहित्य में जिस प्रकार आदिकाल या वीरगाथाकाल है उसी प्रकार केरल के प्राचीन साहित्य में भी इन्हीं योद्धाओं की वीरगाथाओं का वर्णन है। उत्तर केरल में प्रचलित ये वीरगाथाएँ 'वटक्कन पाट्टुकल' (उत्तरी गीत) नाम से जानी जाती हैं। लेकिन हिन्दी की वीरगाथाओं से ये अलग प्रकार की हैं, क्यों कि ये मौखिक रूप से प्रचलित थीं। इस प्रकार वीरगाथा सुनानेवालों को 'पाणनार' कहते थे।

जिस प्रकार उत्तर केरल में वीरगाथाएँ गाई जाती थीं, उसी प्रकार दीक्षण केरल में भी गीतों के रूप में गाथाएँ प्रचलित थीं। इन्हें 'तेक्कन पाट्टुकल' (दक्षिणी गीत) कहते हैं। लेकिन ये उत्तर केरल की वीरगाथाओं के समान उतनी प्रसिद्ध नहीं हुईं। कुछ शोधकर्ताओं ने इन पर शोध किए और उनके फलस्वरूप तीन-चार ग्रन्थ भी इन पर रचे गए।

दक्षिण केरल की वीरगाथाओं पर ग्रन्थ लेखन करनेवालों में श्री.डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन का प्रमुख स्थान है। ये गीत, मौखिक रूप में पढ़े जाते थे। किन्तु गुरु - निन्दा के भय से ये गीत कहीं भी छापे नहीं गये थे। लेकिन इन्हीं गीतों को छपाकर इनके बारे में लोगों को जानकारी देने में डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन जी का अनुपम श्रेय है।

गंगाधरन जी का जन्म सन् 31 अक्तूबर 1934 को तिक्कुरिशी में हुआ। इन्होंने मलयालम में एम.ए और पी.एच.डी उपाधियाँ प्राप्त कीं। मलयालम गद्य भाषा के पिता केरलवर्मा वलियकोई तंपुरान के साहित्यिक जीवन पर शोध करके इन्होंने पी.एच.डी की उपाधि हासिल की। प्रो.गुप्तन नायर के मार्ग-दर्शन में इन्होंने अपना शोध प्रबंध तैयार किया। आठ वर्षों के प्रयत्न के फुलस्वरूप उन्होंने अपना शोध प्रबंध तैयार किया, जिसमें शत प्रतिशत मौलिक दृष्टिकोण है। एक हाईस्कूल अध्यापक के रूप में इन्होंने अपनी जीविका शुरू की। उसके बाद अध्यापक प्रशिक्षण कॉलेज में प्राध्यापक बन गये। 'मलयालम महानिघंटु' के सह संपादक के रूप में काम किया। उसके बाद केरल विश्वविद्यालय में शोध मार्गदर्शक बन गए।

साहित्यिक जीवन के बारे में कहें तो इन्होंने लघु जीवनियाँ, बाल साहित्य, केरलवर्मा का अध्ययन, ग्रन्थ समीक्षा, दक्षिण वीरगाथाएँ आदि पर लगभग पच्चीस ग्रन्थों की रचना की। 'केरलवर्मा साहित्य अकादमी' के सर्वप्रथम साहित्य पुरस्कार इनके 'केरलवर्मा पठनङ्ङल' नामक ग्रन्थ को मिला। 'महाकवि उल्लूर स्मारक पुरस्कार' भी इन्हें मिला।

गंगाधरनजी की पत्नी का नाम है श्रीमती पद्मावति अम्मा। वे एक अध्यापिका थीं और कुछ वर्षों के पहले उनका निधन हुआ। इनके एक बेटा और दो बेटियाँ हैं

- प्रेमचन्द्रन, षीला और लेखा। गंगाधरन जी अब भी अपने जीवन - पथ में कर्मरत हैं।

श्री. तिक्कुरिशी गंगाधरन जी के प्रकाशित शोध ग्रन्थ ये हैं - 'तेक्कन पाट्टिले तंपुरान कथकल', 'वेणाटिन्टे कथा गानङ्ङल', 'उलकुट्टे पेरुमाल पाट्टुकथा', 'पुत्तरियंकम', 'तेक्कन कथागानङ्ङल', 'इरविक्कुट्टिप्पिल्ला पोरु ओरु पठनम्', 'जीवतालंकलुटे पाट्टुकल', 'चरित्रम् साक्ष्यं वहिक्कुन्ना यक्षिक्कथकल' आदि।

इनके अलावा केरलवर्मा पर शोध करके इन्होंने लगभग पाँच ग्रन्थों की रचना की है। बाल साहित्य और पाठ्य पुस्तकों की भी रचना की है। इनसे लिखित जीवनियाँ हैं - 'सुभाष चन्द्रबोस', 'स्वदेशाभिमानी रामकृष्ण पिल्लै' और 'महच्चरितमाला'। इनके लेखों का समाहार है - 'अक्षरमाला मुतल ग्रन्थ समीक्षा वरे'। (वर्णमाला से ग्रंथ समीक्षा तक)।

दक्षिण केरल की असली संस्कृति इनसे संपादित दक्षिण कथा गीतों में देखा जाता है। दक्षिणी गीतों की भाषा की विशेषता यह है कि तमिल और मलयालम भाषाओं का मिश्रित रूप है। 'वीर मार्ताण्ड पेरुमाल' या 'पोट्टक्कल तंपुरान' नाम से प्रसिद्ध वीर योद्धा के जन्म के समय का वर्णन इस प्रकार किया गया है -

"पत्तुमातम् पकुतिक्कालम् कषिञ्ञोरु नाळ
पकलवनारुमत्तमिच्चु नींकियारे
पातिरात्तिरी कषिञ्ञनेरत्तल्लो
राणियालक्कु ईट्टुनोवु तुटंकिनारे।"

(अर्थात् गर्भ दस महीने का हो गया और एक दिन सूर्यास्त के बाद आधी रात के समय राणी को प्रसव वेदना शुरू हुई।)

दक्षिण की वीरगाथाएँ दो प्रकार की होती हैं - 'तोट्टम पाट्टु' और 'विल्पाट्टु'। मंदिर की आराधना मूर्तियों को संप्रीत करने के लिए 'तोट्टम पाट्टु' का आलाप होता है। उपर्युक्त पंक्तियाँ 'तोट्टम पाट्टु' के अंतर्गत आती हैं। इसमें 'नंतुणी' जैसे वाद्योपकरण का प्रयोग किया जाता है। बिना रुकावट के निरंतर आलाप होने के आधार पर दक्षिण में एक ही गीत शैली है - 'तोट्टम पाट्टु पोले'।

'विल्पाट्टु' में मुख्य रूप से यक्षी की कथायें होती हैं और अन्य देवताओं की भी। वर्ष में एक या दो बार ही इनका आलापन होता था। मौखिकता को प्रमुखता देने के कारण इन गीतों का आलापन एक विशेष ताल के साथ होता है। ये गीत व्याख्या - साहित्य 'वेणाटिन्टे कथागानङ्गल' नामक ग्रन्थ में हमें प्राप्त होते हैं।

"मरुवणी तुलसीमालै मायवन अरंगन कन्नन
करुनिरा वण्णन सीतै, कमलयोन तिरुविन
नाथन
तिरुवनंतलूट्ट चेयितयै चेप्पा चेव्वे
ओरु मरुप्पुटैय वेलै उमै मकन काप्पतामे।"

(दुष्टों का निग्रह और शिष्टों की रक्षा करने के लिए श्री पद्मनाभ स्वामी ने कलियुग में तिरुवनन्तपुरम में अवतार ले लिया।)

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'श्री पद्मनाभपेरुमाल आगमन चरित्रम्' में से ले लिया है।

दक्षिण केरल की असली संस्कृति इन कथा गीतों में देखी जाती है। ये गीत ऐतिहासिक कथाएँ या

जीवनियाँ हैं। इनके कथानायक कभी - कभी देवता का संकल्प धारण करते हैं। जो इतिहास में नहीं होता या हमारे स्मृति पथ में नहीं रहता, ऐसी वीरकथाओं का इन गीतों के द्वारा पुनः सृजन होता है।

इन गीतों का व्यवस्थापित लिखित रूप मिलना बहुत दुष्कर है। डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन जी के दीर्घकालीन परिश्रम के फलस्वरूप ही ये दक्षिणी गीत (दक्षिण के गीत) हमें प्राप्त हुए हैं। तिरुवनन्तपुरम, कन्याकुमारी तथा तिरुनेलवेली जिलों में से अनेक शिष्टजनों की सहायता से इन्हें प्राप्त करके व्याख्या सहित छापने का श्रेय गंगाधरन जी को है। 'दक्षिणी गीत' हमें उपलब्ध कराये डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरनजी साधुवाद के पात्र हैं।

संदर्भ

1. तेक्कन पाट्टिले तंपुरान कथकल - डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन, पृ.सं. 31
2. वेणाटिन्टे कथागानङ्ङल - डॉ. तिक्कुरिशी गंगाधरन, पृ.सं. 30

सहायक ग्रंथ

1. तेक्कन पाट्टिले तंपुरान कथकल - डॉ.तिक्कुरिशी गंगाधरन, साहित्य कैरली पब्लिकेशन्स, वर्ष 2014
2. वेणाटिन्टे कथागानङ्ङल - डॉ. तिक्कुरिशी गंगाधरन, साहित्य कैरली पब्लिकेशन्स, वर्ष 2011

♦ हिंदी अध्यापिका,
चिन्मया विद्यालय,
नरुवामूटु, तिरुवनन्तपुरम।
फोन- 9747148928

Form IV

Statement about ownership and other particulars about the newspaper 'Shodh Sarovar Patrika' to be published in the first issue every year after the last day of February.

1. Place of publication - Thiruvananthapuram, Kerala.
2. Periodicity of publication - quarterly.
3. Printer's name - Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
4. Publisher's name- Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
5. Editor's name- Dr.P.Letha
   Nationality - Indian
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.
6. Name and addresses of individuals who own the newspsper and partner's or shareholders holding more than one percent of the total capital-
   Name- Dr.P.Letha
   Address- 'Arathi', TC14/1592, Forest Office Lane, E-28, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram, Kerala. PIN-695014.

I, Dr.P.Letha, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 26/03/2020 sd/-
Dr.P.Letha

सारा जोसफ का उपन्यास 'अकले-अरिके'- एक अध्ययन

♦ डॉ. लक्ष्मी एस.एस

मलयालम साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में श्रीमती सारा जोसफ का नाम उल्लेखनीय है। सारा जोसफ का जन्म 10 फ़रवरी 1946 को त्रिशुर जिले के कुरियाचिरा नामक गाँव में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। मलयालम के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार सर्वश्री तकषि़ शिवशंकर पिल्लै, पी. केशवदेव, श्री. एम्.वासुदेवन नायर, एटश्शेरी गोविंदन नायर आदि की कृतियों ने बचपन से ही साराजी को प्रभावित किया है। सारा जी लेखिका के साथ समाज सेविका भी हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं- अकले-अरिके (1978),आलाहायुटे पेण्मक्कल (1999), माट्टात्ती(2003), ओतप्पू (2005), ऊरूक्कावल (2008),आति (2011)।

'अकले-अरिके'(दूर -निकट) 1978 श्रीमती सारा जोसफ के एक सौ चार पृष्ठोंवाला एक छोटा-सा लघु उपन्यास है। श्रीमती सारा जोसफ के 'अकले - अरिके'(दूर निकट) उपन्यास की नायिका टेस्सी का पति डेविड रोगग्रस्त होकर अस्पताल में है, जो मृत्यु से बच जाना सम्भव नहीं है। लेकिन टेस्सी गोलीयाँ देकर उसकी जान बचाना चाहती है। वह जानती है कि अपने पति की मृत्यु निकट है। मिस नीना नामक नर्स टेस्सी को डेविड की बीमारी की गम्भीरता तथा आसन्न मृत्यु का पता देती है। टेस्सी डेविड के लिए दवा खरीदने को अपनी अँगुठी बेचती है, जो शादी में डेविड ने उसे पहनाई थी। दावा खाना में एक युवक को देखकर उसे अपने सुरेन की याद आई, जो उसे सच्चे दिल से चाहता है। उसके दुलार भरे शब्द टेस्सी विस्मृत नहीं कर सकती थी।

टेस्सी को अपने परिवार में बहुत लाड़-प्यार मिला था। लेकिन विवाह के बाद पति से उसे वह स्नेह कभी नहीं मिला। डेविड ने कभी उसे दुलारा नहीं, प्रथम रात्रि में भी नहीं। टेस्सी और डेविड में ऊम्र का भी अन्तर था। टेस्सी को पहली रात में ही डेविड के बरताव में निन्दा महसूस हुई। अब डेविड की रीढ़ की हड्डी में मारक बीमारी है। डाक्टरों ने भी कहा है कि डेविड को बचाना मुश्किल है। टेस्सी को अपने वैवाहिक जीवन में डेविड से ऐसा कुछ भी सुखद अनुभव नहीं हुआ है, जिसकी स्मृति में वह पूरी ज़िन्दगी काट ले। वह अपने मृतप्राय पति की चिन्ता में दुखी होने से ज़्यादा अपने प्रेमी के सामिप्य की यादों में खो जाती है। अपने पति का एक मधुर चुम्बन तक उसे नहीं मिला है।

नर्स नीना टेस्सी से कहती है कि डेविड हरेक क्षण मृत्यु की राह की ओर जा रहा है। टेस्सी देखती है कि डेविड या तो दर्द से तड़प रहा है या अर्धनिद्रा में होता है। मृतप्राय डेविड के प्रति सहानुभूतिपूर्वक टेस्सी सोचती है- अपनी जैसी एक युवती के साथ शादी की, यही डेविड के जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। उसकी

आराधना करनेवाली, उसके उपलिब्धियों में खुश होनेवाली एक युवती उसे मिलनी चाहिए थी। वह डेविड से पूछती थी "तुम मेरा मन क्यों नहीं समझते हो डेविड?" उसके उत्तर में डेविड ऐसा पूछता था कि 'मन? वह क्या चीज़ है' डेविड से टेस्सी को जो आसरा मिला था, वह उसे बलपूर्वक किया गया वशीकरण ही महसूस हुआ।

सिस्टर नीना अपनी ड्यूटी के बाद जाते वक्त अगली ड्यूटीवाली सिस्टर कांचना से डेविड के लिए ज़रूरी बाते बता देती है। बीमार डेविड से मिलने के लिए सुरेन आता है। सुरेन कहता है कि वह अगले दिन लौट जानेवाला है- साढ़े पाँच बजे। सुरेन टेस्सी को अभी स्वीकार करने तैयार है। अतः कहता है कि अगर टेस्सी कहे तो वह उसके लिए कितने भी काल हो प्रतीक्षा करने को तैयार है।

डेविड के प्रति टेस्सी के मन में स्नेह न था, लेकिन उसकी बीमारी की हालत पर उसे सहानुभूति है और अब उसे डेविड संसार का सबसे प्रिय भी मालूम होता है। ईश्वर की विकृति इसमें है कि टेस्सी यदि डेविड के लिए है तो उन्होंने क्यों टेस्सी का मन डेविड के मन के अनुरूप नहीं बनाया? डेविड के बदले मरने के लिए भी टेस्सी तैयार है। डेविड की बीमारी की हालत में टेस्सी सोचती है कि डेविड के स्पर्श के अनुरूप व्यवहार करने में वह असमर्थ रही। लेकिन जब सुरेन ने उसका स्पर्श किया था, उसकी मानसिक अनुभूति दिव्य थी।

टेस्सी सदा अकेली थी। पूर्णता को खोजती उसकी अभिलाषाएँ सदा पंख थकी चिड़ियाँ जैसी थीं।

डेविड पहचानता है कि अपनी मृत्यु नज़दीक है। यह कठोर सत्य पहचानकर डेविड ज़्यादा कठोर हो गया। डेविड की मानसिक अवस्था पहचानकर टेस्सी उसका उपचार करने लगी तो डेविड, या तो उसका उपहास करने लगा या घृणा से गाली देने लगा। पहले से ही डेविड सदा अपने में सीमित रहा। डेविड अपने सभी कार्यों से टेस्सी को अलग करता था, घर के कार्य में हो या रुपये के कार्य में हो। उसने टेस्सी से बिना बताए उसके आभूषण घर खरीदने के लिए बेच दिए थे। ऐसे संदर्भ में उसे ऐसा लगा कि डेविड की ज़िंदगी में उसे थोड़ा भी स्थान नहीं है।

ज़िन्दगी के व्यवहारिक पक्षों के बारे में टेस्सी अनभिज्ञ है। डेविड की परछाई में रहने के कारण ज़िन्दगी के रंगभेदों का बाह्य रूप उसने कभी नहीं देखा है। कभी जीवन में कठिनाइयों का सामना करने की नौबत नहीं आई है। वैवाहिक सम्बन्ध में एक बच्चा पैदा होने की आशा थी, वह भी नहीं मिला।

एक दिन जब सुरेन और टेस्सी ने एक साथ गिरजाघर में खड़े होकर प्रार्थना की तो सुरेन ने ईश्वर से अगले जन्म में टेस्सी से मिलने तथा एक साथ जीने का मौका देकर अपना जीवन परिपूर्ण करने की विनती की।

डॉक्टर डेविड की जाँच करके गया, फिर सिस्टर नीना डेविड की दवा की लिस्ट लेकर आई। टेस्सी दवा खरीदकर आई तो नीना ने रेलवे सटेशन में सुरेन से मिलने की खबर टेस्सी को सुनाई। वह सुरेन और टेस्सी के बीच का प्यार जानती थी। उसने टेस्सी से कहा कि टेस्सी अब भी युवती और सुन्दरी है। अतः चाहे तो वह और एक शादी कर सकती है। सुरेन के घरवालों द्वारा उसके लिए नियत शादी के बारे में भी टेस्सी से नीना कहती है।

अब कुछ देर के लिए डेविड को कुछ नहीं होगा, इस विचार से आखिरी बार सुरेन से मिलने टेस्सी रेलवे स्टेशन पहुँची और विदा देकर वापस अस्पताल में लौटी। तब डेविड का अन्तिम श्वास जा चुका था।

'अकले-अरिके' की नायिका टेस्सी कामकाजी है साथ ही स्वावलंबी है। अपने पति को मन से न चाहती हुई भी पति की सेवा को अपना कर्म और कर्तव्य समझती है। सारा जोसफ के उपन्यासों के नारी पात्रों में टेस्सी की अपनी अलग पहचान है, यही उनकी विशेषता है।

♦ असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एन.एस.एस कॉलेज, पंतलम
फोन - 9400856238

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.23 के आगे)

11.'अवन वींटुम वरुन्नु' नाटक के लेखक कौन हैं?

(अ) सी.जे.थोमस

(आ) कावालम नारायण पणिक्कर

(इ) रामचन्द्रन मोकेरी (ई) जी.शंकर पिल्लै

12.'अवन वींटुम वरुन्नु' नाटक के अनुवादक कौन हैं?

(अ) डॉ.एम.एस.विश्वंभरन

(आ) डॉ.टी.एन.विश्वंभरन

(इ) पी.जी वासुदेव (ई) डॉ.वी.वी.विश्वम

13.'हल्लाबोल' नाटक मलयालम में किसने अनुवाद किया?

(अ) डॉ.के.जी.प्रभाकरन

(आ) डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

(इ) डॉ.वी.रवीन्द्रन (ई) डॉ.के.एम.मालती

14. 'कोमल गांधार' के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?

(अ) पी.एन.दामोदरन पिल्लै

(आ) डॉ.पी.वी.विजयन

(इ) डॉ.जी.गोपीनाथन (ई) डॉ.ए.अरविन्दाक्षण

15. 'कूटटुकृषि' नाटक के हिन्दी अनुवाद का नाम क्या है?

(अ) सहकारी कृषि (आ) सह खेती

(इ) सहकारी खेती (ई) सम्मिलित खेती

16. 'आधे-अधूरे' नाटक के मलयालम अनुवाद का नाम क्या है ?

(अ) पकुति अपूणम् (आ) अर्द्ध अपूर्णम्

(इ) अपूर्णम् अर्द्धम् (ई) अपूर्णत

सही उत्तरः

(1) अ	(2) ई	(3) अ	(4) आ
(5) ई	(6) आ	(7)अ	(8) आ
(9) इ	(10) आ	(11) अ	(12) इ
(13) इ	(14) ई	(15) इ	(16) आ

ओ.एन.वी. और काव्याख्यायिका 'उज्जयिनी'

♦ डॉ.धन्या.एल

भारत के हिन्दी क्षेत्र के सुदूर दक्षिण भारत की भाषा है 'मलयालम'। इसकी साहित्यिक संपदा काफ़ी समृद्ध है। मलयालम काव्य जगत् के लोकप्रिय कवियों में ओ.एन.वी कुरुप का स्थान काफ़ी ऊँचा है। केरल की वर्तमान पीढ़ी के सभी पाठक ओ.एन.वी. के नाम से अच्छी तरह परिचित हैं।

मलयालम के प्रतिभाशाली साहित्यकारों में श्री 'ओट्टप्लाक्कल नीलकंठन वेलु कुरुप' का नाम प्रसिद्ध है। आप 'ओ.एन.वी.कुरुप' के उपनाम से जाने जाते हैं। आपका जन्म 27 मई 1931 में केरल के कोल्लम जिले के चवरा नामक गाँव में हुआ था। माता-पिता का नाम श्रीमती के.लक्ष्मीकुट्टी अम्मा और ओ.एन.कृष्ण कुरुप हैं। केरल विश्वविद्यालय के पांडुलिपि विभाग से सेवानिवृत्त अधिकारी श्रीमती पी.वी.सरोजिनी अम्मा ओ.एन.वी.कुरुप जी की धर्मपत्नी हैं। उनके एक पुत्र राजीव और एक पुत्री डॉ.मायादेवी हैं। चवरा में आपकी प्रारंभिक शिक्षा संपन्न हुई। अर्थशास्त्र में स्नातक और मलयालम में स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद सन् 1957 से केरल के विविध सरकारी कॉलेजों में अध्यापन किया। सन् 1986 में सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के मलयालम स्नातकोत्तर विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया। केरल के विभिन्न सरकारी कॉलेजों में 30 वर्षों तक अध्यापन-कार्य किया। एक साल कालिकट विश्वविद्यालय में विज़िटिंग प्रोफेसर भी रहे। इसके बाद महाकवि वल्लत्तोल के नेतृत्व में संस्थापित 'केरल कलामंडलम्' के अध्यक्ष के पद पर केरल सरकार ने ओ.एन.वी.को मनोनीत किया। इस कला संस्था की प्रगति केलिए उन्होंने अथक परिश्रम किया। इस पद के अलावा दक्षिण के अनेक विश्वविद्यालयों की अकादमिक समितियों के अध्यक्ष, 'इट्टा' की केरल शाखा के प्रेसिडेंट, 'प्रगतिशील लेखक संघ' के राष्ट्रीय अध्यक्ष, 'इंडियन पेरफार्मिंग राइट सोसाइटी, मुंबई' के डायरेक्टर बोर्ड मेंबर और 'नेशनल फेडरेशन ऑफ प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली' के प्रेसिडेंट, के.पी.ए.सी, केरल साहित्य अकादमी, केंद्रीय साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ आदि अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में कई पद अलंकृत किये। ओ.एन.वी.जी ने अपने अंतिम समय तक तिरुवनन्तपुरम जिले में कोट्टनहिल स्क्वायर के समीप 'इंदीवरम' घर में सरपिवार रहते थे। आपका निधन 13 फरवरी 2016 में हुआ।

बाल्यकाल से ही ओ.एन.वी जी का रुझान कविता में था। उनका रचना-संसार काफ़ी विस्तृत है। उनका प्रथम काव्य-संकलन 'पोरुतुन्ना पालस्तीन'

सन् 1951 में प्रकाशित हुआ था। इसमें तेरह कविताएँ संकलित थीं। उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं - समरत्तिण्टे सन्ततिकल (संग्राम की संतानें), ञान निन्ने स्नेहिक्कुन्नु (मैं तुझसे प्यार करता हूँ), माट्टुविन चट्टङ्ङले (बदल डालो नियमों को), दाहिकुन्ना पानपात्रम (प्यासा चषक), ओरु देवतयुं रंटु चक्रवर्तिमारुम (एक देवी तथा दो सम्राट), मरुभूमि, कटिञ्ञूल कनिकल (प्रथम फल), नील कण्णुकल (नीली आँखें), मयिलपीली (मोरपंख), अग्निशलभङ्ङल (अग्नि शलभ), ओरु तुल्लि वेलिच्चम (एक बूँद प्रकाश), तामर पोय्का (कमल - सरोवर), गानमाला, गानोत्सवम्, अक्षरम् (अक्षर), करुत्त पक्षियुटे पाट्टु (काले पक्षी का गीत), भूमिक्कोरु चरमगीतम् (भूमि को मृत्युगीत), भैरवन्टे तुटि (भैरव का डमरू), उप्पु (नमक), शार्ङ्गक पक्षिकल् (शार्ङ्गक पक्षी), मृगया, वेरुते (वृथा), चोरूणु (अन्नप्राशन), हस्तदान, अम्मा (माँ), नरुमोषि, अपरह्नं (अपराह्न), क्षणिकम् पक्षे (क्षणिक किन्तु), अर्ध विरामङ्ङल (अर्ध विराम), मन्दिर मस्जिद, स्नेहिच्चु तीरात्तवर (स्नेह जिनके शेष हैं), ओ.एन.वीयुटे नालु काव्य समाहारङ्ङल (ओ.एन.वी.के.चार काव्य संकलन), उज्जयिनी, स्वयंवरं (स्वयंवर), दिनान्तं (दिनान्त), माणिक्य वीणा, वयलपूक्कल् (खेत के फूल), तोन्याक्षरङ्ङल् (अक्खड़ अक्षर), वलपोट्टुकल् (चूड़ी के चुकड़े, बाल साहित्य), कार्ल मार्क्सिन्टे कवितकल (कार्ल मार्क्स की कविताएँ; अनुवाद), कवितयुटे समान्तर रेखकल् (कविता की समानान्तर रेखाएँ ; आलोचना) आदि। इनके 21 कविता संग्रह, एक बाल कविता संग्रह और साहित्यिक अध्ययन की चार पुस्तकें आदि प्रकाशित हैं। दो सौ से अधिक फिल्मों और अनेक नाटकों केलिए उन्होंने गीत रचे। संगीत व ताल पर इनका अधिकार प्रशंसनीय है। अनायास ताल, अनुप्रास आदि आ जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानवतावाद के आयाम तक इनकी कविता फैल गयी।

ओ.एन.वी.जी अपने काव्य-साहित्य तथा सिनमा गीतों केलिए कई बार पुरस्कृत हुए हैं। अग्निशलभङ्ङल् (केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1971), अक्षरम् (केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1975), उप्पु (सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, 1982), करुत्त पक्षियुटे पाट्टु (केरलवर्मा जन्मशती पुरस्कार, 1981), भूमिक्कोरु चरमगीतम् (विश्वदीप पुरस्कार, 1987) आदि उनकी पुरस्कृत रचनाएँ हैं। इन पुरस्कारों के अलावा उल्लूर पुरस्कार (1990), आशान पुरस्कार (1990), ओटक्कुष़ल पुरस्कार (1990), भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार (कलकत्ता 1992), तेलुगु के प्रसिद्ध कवि जोशुवा के नाम से संस्थापित प्रथम पुरस्कार (1995), सन् 1989 में वैशाल फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ गीतकार केलिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार आदि मिले, सर्वश्रेष्ठ गीतकार केलिए 13 बार राज्य स्तरीय फिल्म पुरस्कार मिले। सन् 1999 में 'केरल साहित्य अकादमी फेलोशिप' मिला।

कई पुरस्कार हासिल किये ओ.एन.वी. कुरुप जी सन् 1998 में पद्मश्री, सन् 2007 में ज्ञानपीठ पुरस्कार और सन् 2011 में पद्म विभूषण से सम्मानित किये गये। सन् 2007 में उन्हें केरल

विश्वविद्यालय (तिरुवनन्तपुरम) द्वारा डी लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। देश - विदेशों में पर्यटन करने का अवसर भी ओ.एन.वी.जी को मिला। अमरीका, ब्रिटेन, सोवियत रूस, गल्फ देश में कई यात्राएँ करने के अवसर प्राप्त हुए।

सहजता की शक्ति के साक्षात् प्रतीक थे श्री. ओ.एन.वी.कुरुप जी। स्वभाव से अत्यंत दार्शनिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने अपनी क्रांतिकारी विचारधाराओं और प्रतिक्रियावादी उत्तेजनाओं को लेकर मलयालम काव्य-साहित्य में पदार्पण किया। उनकी कविता में अनुभूति की ऊष्मता, भावसान्द्रता, अर्थ-गंभीर्य, संवेग एवं आक्रोश आदि अपनी चरमावस्था में परिलक्षित होते हैं। कवि ने अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने केलिए सरस कोमल पद-विन्यास, भाव-सौन्दर्य एवं इतिहास-पुराणों पर आश्रित सघन बिंब, भावोत्तेजन में सहायक सादृश्यमूलक अलंकार, नित्य नूतन प्रतीक, संगीतात्मकता एवं गेयता आदि का सहारा लिया। ओ.एन.वी.जी के काव्य-प्रतीकों में नयी अर्थवत्ता एवं प्रासंगिकता नयी गरिमा भरती है। कविता को संगीत और संगीत को कविता के पास लाने की अद्‌भुत क्षमता उनके पास है। अतः नामी फिल्म गीतकार बने। 'कालम मारुन्नु' (समय बदलता है) पहला फिल्म था। उन्होंने अपने नाट्य गानों और कविता रचनाओं के माध्यम से केरल राज्य में प्रगतिशील आन्दोलनों में भी योगदान दिया।

सामाजिक विषमता के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की प्रेरणा उन्हें अपनी काव्य-रचना के आरंभकाल में ही मिली थी। सर्वहारा वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति, जनता के दुःख-दर्द आदि को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति दी। कविता के धर्म और कवि के दायित्व पर ओ.एन.वी.कुरुप जी के अपने सुलझे हुए विचार हैं। उनकी आरंभिक कृतियों में क्रांति-चेतना अधिक मुखरित हो उठी थी। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में पीछे पड़े जनवर्ग की हिमायत और वकालत करने केलिए कविता को उन्होंने एक औजार बनाया था। पेड़, नदी, आसमान, पक्षी और जानवरों के मंगल की कामना उनकी कविता की आत्मा बन जाती है।

संस्कृत भाषा वाङ्मय और खासकर कालिदास कृतियों पर ओ.एन.वी.कुरुप जी का विशेष अधिकार है। उनका 'उज्जयिनी' काव्य हिन्दी, तमिल, संस्कृत एवं अंग्रेज़ी में अनूदित है। 'उज्जयिनी' काव्याख्यायिका के अनुवादक डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी हैं। श्री.ओ.एन.वी.कुरुप की कथाख्यायिका 'उज्जयिनी' में राजशक्ति और कवि के विडंबनापूर्ण संबंधों की कथा का मार्मिक अंकन है। यह एक दीर्घ काव्य है। इसमें क्रमबद्ध रूप से विकसित होती कथावस्तु है, कथापात्र हैं। ओ.एन.वी.जी ने इस काव्य को 'काव्याख्यायिका' नाम दिया है। इस लंबी कविता के द्वारा ओ.एन.वी.जी ने कविकुल गुरु कालिदास के व्यक्तित्व को नए सिरे से उजागर करने का प्रयत्न किया है। राज्याधिकार को गौण और काव्याधिकार को मुख्य माननेवाले कालिदास का व्यक्तित्व अनूठा है। प्रेयसी मालविका और संदेशवाहक पल्लवन के मन में अंकित कालिदास के हृदयभावों को समझने केलिए पाठकों को एक

नया अवसर कवि ने दिया है। धुँधले पड़े कालिदास के व्यक्तित्व को तेजोद्दीप्त बनाने की भावना ओन.एन.वी.जी की धरोहर है।

उज्जयिनी उत्तर भारत के नगरों में अन्यतम है। उज्जयिनी और कालिदास का परस्पर संबंध प्रेम है, द्वेष भी। ओ.एन.वी.जी के कालिदास उज्जयिनी जाने केलिए उत्सुक न थे। वे सच्चे अर्थों में पृथ्वीपुत्र थे। मालवा के ग्राम जीवन में रमे हुए थे। नदियों-सरोवरों, पेड़-पौधों, खेत-खलिहानों के मनोरम वातावरण में रचे-बसे थे। ग्राम वृद्धों की लोकवार्ताओं के श्रवण से सुसंस्कृत थे। इसी वातावरण में कवि का बचपन बीता था और साथ-साथ लोक गायक की कन्या मालविका से प्रेम भी पल्लवित-पुष्पित हुआ था।

कालिदास केलिए मालविका ही 'रत्न' थी और उज्जयिनी ने उस रत्न का अपहरण कर लिया।

"उज्जयिनी, अपने हृदय में बिठा
पूजता रहा तुम्हें मैं अब तक
किन्तु आज से घृण्य हो मेरे लिए
लानत है तुम्हें कि तुम
रत्नहारी हो गई हो।"[1]

चतुर्थ सर्ग 'काव्यपथिक के दृश्य मंडल' और पंचम सर्ग 'देवात्मा की गोद में' में पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र और दक्षिणी महासागर से उत्तर में स्थित देवात्मा हिमालय के बीच की विशाल भारत भूमि का सुन्दर चित्रण है। कवि के यात्रा-प्रदेश में दक्षिणापथ आता है, जिसे देखकर कवि ओ.एन.वी.जी का हृदय सहज ही उमड़ पड़ता है। केरल का चित्रणवाली कुछ पंक्तियाँ देखिए -

"मरीच की लताओं पर कबूतरों की
ठिठोली।"
"सामने ही शैल मलय दर्दुर।"
"बिखेरता मंद पवन
केतकी पराग रेणु
शीतोपचार करता मुरची नदी तट
वह काव्य यात्री पुनः
यात्रा कर रहा है -
दक्षिणापथ- सौंदर्य केदार की।"[2]

इससे यह स्पष्ट होता है कि एक सच्चे कवि की जड़ें अपने प्रदेश की प्रकृति और संस्कृतिमयी रहती हैं। ओ.एन.वी.जी ने स्वर्ग को संबोधित करते हुए पृथ्वी की महिमा का अद्‌भुत गान लिखा है -

"कल्पवृक्ष, काम धेनु, क्षीरसागर
का अमृत -
सर्वस्व अपनानेवाले हे स्वर्ग!
क्या भूमि स्वर्ग के शाप से
शापितों केलिए हैं?
विश्व में ऐसा कोई स्थान दूसरा है
क्या?
धसी यह उदार रमणीय भी है।"[3]

कवि केलिए पृथ्वी का सामिप्य एक प्रकार का ऐन्द्रिय अनुभव है। 'कश्चित् कान्ता-विरह गुरुणा' शीर्षकवाले बारहवें सर्ग में इसी अनुभव का सुन्दर चित्र है -

"धरती पर जब मैं प्रतिदिन
करता हूँ शयन
प्रवाहित हो उठती है शिराओं में मेरी

पहचानता हूँ उसे मैं।"[4]

कालिदास (कवि) को उज्जयिनी का निमंत्रण मिला और उन्हें ले जाने केलिए अश्वरोही राजपुरुष आए तो उनकी पहली प्रतिक्रिया थी 'अस्वीकार'। वहाँ अपने प्रिय मुखमंडल (मालविका) के दर्शन करने के तात्पर्य से अधिक सोच-विचार के बाद कवि ने उज्जयिनी जाने का फैसला किया। काव्यकृति का नवम सर्ग अत्यंत मर्मस्पर्शी है। इस काव्याख्यायिका का सबसे बड़ा सर्ग भी यही है। प्रस्तुत सर्ग में कवि ने अपने अनुचर बंधु पल्लव की सहायता से अपनी बाल प्रिया मालविका का साक्षात्कार किया। किन्तु दर्शन - प्रतिदर्शन से ही तृप्ति नहीं हुई। उस दिन कवि ने पहले पहल सहलाया उसका हाथ। किन्तु सम्राट तक यह समाचार पहुँच गया। सम्राट ने एक वर्ष के लिए कवि को देश से निकाला। मधुमय शब्दों में सम्राट ने कवि को ऐसे एकांत स्थान में रहने की सलाह दी, जहाँ वे शहर की भीड़ भाड़ से दूर अपना निर्बाध काव्य -साधन कर सके। स्वाभिमानी कालिदास सभी सुविधाओं को त्यजकर अकेले 'रामगिरि' की ओर चले। 'रत्नपरीक्षा' नामक दशम सर्ग में यह चित्रित किया गया है कि कालिदास के प्रेम-प्रसंग का पता चले जाने के बाद सम्राट ने कालिदास (कवि) के पास प्रलोभन केलिए एक राजगणिका (राजनर्तकी) को भेजा। किन्तु राजगणिका हताश होकर वापस गयी।

रामगिरि से लौटने पर उज्जयिनी में कालिदास आये, अपनी मालविका की उज्जयिनी में। लेकिन मालविका ने अपने प्राण तज दिए थे। पूरे करुण प्रसंग पर ओ.एन.वी.जी ने लिखा है -

"लौट नहीं सकता है मोती अब
सीपी के भीतर
गिर नहीं सकता वापस समुद्र में
अपनाया जिन्होंने मोती को
विनिमय करते हैं वे ही
दूसरों से उसका
फिर भी जारी रहता है मोती का
दुरन्त।"[5]

कालिदास ने अपने श्रेष्ठ काव्य 'मेघसंदेश' को मालविका के स्मृति मंडप पर समर्पित कर दिया। शिविका में निष्प्राण बैठी हुई मालविका का चित्रण ओ.एन.वी ने ऐसा किया है -

"जैसे समय की पलक में जमी हुई
लोल तरल बाष्प-बिन्दु हो।"[6]

मालविका केलिए निर्मित श्वेत् मंडप ओ.एन.वी जी का 'ताजमहल' है और 'उज्जयीनी' काव्य एक नया 'मेघ संदेश' है। कवि कालिदास के जीवन के स्मरणीय प्रसंगों को इधर अभिव्यक्ति मिली है। आज भी सत्ताशाही का जो स्वरूप ज़ारी है, उज्जयिनी उसका प्रमाण है। भाव एवं शिल्प की दृष्टि से ओ.एन.वी.कुरुप जी की कविताएँ मलयालम साहित्य के विकास के क्रम में एक विशेष उपलब्धि हैं। 'उज्जयिनी', 'स्वयंवरं' जैसी अनेक कृतियों द्वारा श्री.ओ.एन.वी.कुरुप जी केरल की प्रथम श्रेणी के कवि सिद्ध हुए हैं। कालिदास और 'उज्जयिनी' काव्य दोनों सारे भारतीय मनीषियों को सदा मोहित करते आये हैं और आगे भी करेंगे। सभी भारतीय भाषाओं के काव्य-प्रेमियों

को यह रचना काव्यानंद देती है। कवि ओ.एन.वी जी केरलीय जन मानस में अमर रहेंगे।

संदर्भ

1. उज्जयिनी, मूल कवि-ओ.एन.वी.कुरुप, अनुवादक-एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, पृ.सं. 47
2. वही, पृ.सं. 70
3. वही, पृ.सं. 83
4. वही, पृ.सं. 181
5. वही, पृ.सं.209
6. वही, पृ.सं.209

सहायक ग्रंथ

1. उज्जयिनी, मूल कवि - ओ.एन.वी.कुरुप, अनुवादक - एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, प्रकाशक - साहित्य भंडार, इलाहाबाद।
2. स्वयंवर, मूल कवि - ओन.एन.वी.कुरुप, अनुवादक - डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, प्रकाशक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. दर्शन - डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै, प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
4. मलयालम साहित्य : मार्ग और मार्ग दर्शक - डॉ.आरसु, प्रकाशक - जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. एक धरती एक आसमान एक सूरज, मूल कवि - ओन.एन.वी.कुरुप, अनुवादक - डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

◆ सहायक आचार्य
के.एस.एम.डी.बी.कॉलेज
शास्तांकोट्टा, कोल्लम जिला।

श्रीकुमारन तंपी- कवि और गीतकार

(पृ.सं.31 के आगे)

आधिपत्यं (1983), बन्धुक्कल शत्रुक्कल (1983), विलिच्चु विलिकेट्टु (1985), युवजनोत्सवं (1986), अम्मे भगवती (1987) आदि फिल्मों ने बोक्स ऑफीस सफलता पायी।

तंपीजी प्रेमगीतों के प्रणेता के रूप में बहुचर्चित हैं, क्योंकि उनके अधिकांश गीत रूमानी भाव के हैं तथा नोस्टालजिक भावना जगाते हैं। अतः वे मलयालम में 'हृदय रागङ्ङलुटे कवि' (प्रेमगीतों के कवि) कहे जाते हैं। तंपीजी के भावात्मक गीत संगीत निर्देशक स्वर्गीय श्री.एम. अर्जुनन के निर्देशन में निकले तो बड़े यशस्वी और प्रभावी हो गये, जैसे– 'कस्तूरि मणक्कुन्नल्लो काट्टे', 'पौर्णमी चन्द्रिका तोट्टु विलिच्चु' जैसे कई गीत। 'काट्टुमल्लिका' सिनेमा का 'तामर तोणियिल तालोलमाटी' डॉ.के.जे.येशुदास से गाया गया तंपीजी का प्रथम गीत है। मलयालम सिनेमा को श्री पी. सुब्रह्मण्यम्जी (मेरीलाण्ड स्टुडियो) की वजह से तंपीजी जैसे गीतकार प्राप्त हुए। सबसे ज़्यादा प्रभावी एवं यशस्वी गीत मलयालम सिनेमा को तंपीजी ने प्रदान किये। जगति श्रीकुमार, मणियनपिल्ला राजु जैसे अभिनेताओं का मलयालम सिनेमा में श्रीगणेश तंपीजी के हाथों संपन्न हुआ।

श्रीकुमारन तंपी नामक महान को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। श्रीकुमारन तंपी की काव्यशैली सहज और स्वतःसिद्ध है। उनकी भाषा प्रवाहमयी है। प्रयुक्त शब्द पैने और सारगर्भित हैं। वे केरलीय जनमानस में चिर प्रतिष्ठा पायी कई काव्य पंक्तियों तथा फिल्म गीतों के प्रणेता हैं।

तकष़ी का उपन्यास साहित्य

♦ विजयलक्ष्मी.एल

तकषि़ शिवशंकर पिल्लै मलयालम साहित्य के अग्रणी लेखक हैं। इनका जन्म 17 अप्रैल 1912 में और मृत्यु 10 अप्रैल 1999 में हुई थीं। जन्म स्थान तकषि़ है अतः वे तकषि़ नाम से विख्यात हैं। दक्षिण भारत में जन्मे तकषि़ का कथा साहित्य तत्कालीन समाज के निर्धन वर्ग के जीवन-संघर्षों का जीता-जागता दस्तावेज़ है। जिस प्रकार हिन्दी कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपने साहित्य को आम जनता से जोड़ दिया था उसी प्रकार तकषि़ ने मलयालम साहित्य में किसान, मज़दूर व साधारण जनता की ज़िन्दगी की झटपटाहटों को अपने लेखन का विषय बनाया। उन्होंने 30 उपन्यासों और 20 कहानी-संग्रहों से मलयालम कथा-साहित्य को संपन्न किया।

उपन्यास

त्यागत्तिनु प्रतिफलम् (1934), पति पंकजम्(1935), सुशीलन (1938), परमार्थङ्ङल(1945), विल्पनक्कारी(1946), तलयोट्टु(1947), तोट्टियुटे मकन (1947), रन्ट्टिङ्ङषि़ (1948), तेण्टिवर्गम् (1950), अवन्टे स्मरणयिल (1955), चेम्मीन (1956), औसेप्पिन्टे मक्कल (1959), अंचु पेण्णुङ्ङल (1961), जीवितं सुन्दरमाणु (1961), एणिप्पटिकल (1964), धर्म, नीतिये अल्ला जीवितम (1965), पाप्पि अम्मयुं मक्कलुं (1965), माँसत्तिन्टे विलि (1966), अनुभवङ्ङल पालिच्चकल (1967), आकाशम् (1967), चुक्कु (1967), व्याकुल मातावु(1968), नेल्लुं तेंङ्ङयुं (1969), पेण्णु (1969), पेण्णायि पिरन्नाल (1970), नुरयुं पतयुं (1970), कोटिप्पोय मुखङ्ङल (1972), कुरे मनुष्यरुटे कथा (1973), अकत्तलम् (1974), पुन्नप्र वयलारिनु शेषम् (1975), अषि़याक्कुरुक्कु (1977), आद्यकाल नोवलुकल (1977), लघु नोवलुकल (1978), कयर (1978), बलूणुकल (1982), ओरु मनुष्यन्टे मुखम् (1983), ओरु प्रेमत्तिन्टे बाकी (1988), एरिन्जटङ्ङल (1990) आदि।

उनके उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों को उसके यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। 'परमार्थङ्ङल' (सच) की जानकी अम्मा, 'चेम्मीन' की चक्की, 'रन्ट्टिङ्ङषि़' की चिरुता जैसी स्त्री पात्र मातृत्व भाव को साकार करनेवाली हैं। 'एणिप्पटिकल'(सीढ़ियाँ) की तंक्कम्मा, 'औसेप्पिन्टे मक्कल' (औसेप्प के बेटे) की क्लारा आदि पात्रों ने प्रेमिका के रूपों को अनुपम बनाया है। विभिन्न कारणों से पीड़ा-भोगी स्त्रियों के प्रति उनके उपन्यास संवेदित हो उठे हैं।

किसान से संबन्धित उपन्यासों में चित्रित किसान अपने विरुद्ध किए जानेवाले दुर्व्यवहारों के प्रति

आक्रोश करनेवाले हैं। 'रन्ट्टिङ्ङषि' उपन्यास इसका मिसाल है। यह उपन्यास तकषि़ के जीवन से अटूट संबन्ध रखनेवाला है। 'तोट्टियुटे मकन'(भंगी का बेटा) दलितों के दर्द को प्रस्तुत करता है। 'चेम्मीन'(झींगा) मछुआरों के जीवन पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए सन् 1957 में उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से अलंकृत किया गया था। ऊपर प्रस्तावित तीन-चार उपन्यासों से ही तकषि़ के वैशिष्ट्य का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। 'कयर' उपन्यास में केरल के विगत डेढ़ सौ वर्षों की ज़िन्दगी का बयान किया गया है। उनके पूरे उपन्यास मानव और मिट्टी के संबन्ध को उजागर करनेवाले हैं।

तकषि़ के आगमन से मलयालम साहित्य को एक नयी दिशा प्राप्त हुई। भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी में भी उनका कथा-साहित्य अनूदित हो चुका है। भारतीय साहित्य को उनके कथा-साहित्य की देन हेतु सन् 1984 में उन्हें सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से नवाज़ा गया था। साथ ही एषुत्तच्चन पुरस्कार (1994), पद्मभूषण पुरस्कार (1985), वयलार पुरस्कार (1984), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी वे विभूषित हुए। उत्तर भारत में प्रेमचंद का जो स्थान है वही दक्षिण भारत में तकषि़ का है। दोनों ही जीवन यथार्थ के उत्कृष्ट अभिव्यक्तिकार हैं।

सहायक पत्रिका

1. युगमानस-13 नवंबर-2013

♦ अध्यापिका, सरकारी मॉडल हाईस्कूल

मूवाट्टुपुष़ा

फोन- 9061036390

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की हीरक जयंती

(पृ.सं.10 के आगे)

गौड़, श्रीमती नमिता राकेश, श्री आशीष कंधवे, श्री संजय गुप्ता, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, श्री नरेश शांडिल्य, विज्ञान व्रत आदि थे। वरिष्ठ कवि श्री बालस्वरुप राही ने काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता की। काव्य गोष्ठी का सफल संचालन प्रसिद्ध कवि श्री विवेक गौतम ने किया। काव्य गोष्ठी के मंचीय समन्वय एवं संचालन का दायित्व डॉ. नूतन पांडेय एवं डॉ.नसीम मोहम्मद ने निभाया। मंचासीन कवियों ने अपनी सशक्त प्रस्तुति से दर्शकों को सम्मोहित किया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक ने शॉल एवं प्रतीक चिह्न देकर सभी कवियों एवं कवयित्री को सम्मानित किया। काव्य गोष्ठी के सत्र का औपचारिक आभार ज्ञापन डॉ.अनुपम माथुर ने किया। हीरक जयंती समारोह का संचालन डॉ.शालिनी राजवंशी एवं डॉ.किरण झा ने किया। हीरक जयंती समारोह का समापन करते हुए प्रोफेसर अवनीश कुमार, निदेशक द्वारा मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ-साथ अन्य अतिथियों एवं निदेशालय और आयोग के सभी सहकर्मियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ।

सूचना

NET (हिन्दी) तथा Spoken Hindi की कक्षाओं में प्रवेश पाने को इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें -

फोन : 9946253648, 0471 - 2332468

मलयालम के इतिहास कथाकार ओ. वी. विजयन

♦ अजित्रा. आर .एस

मलयालम साहित्य के जाने-माने लेखक , कार्टूनिस्ट, एवं पत्रकार श्री.ओ.वी विजयन का जन्म 2 जुलाई 1930 को पालक्काटु जिले में हुआ। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित श्री.ओ.वी. विजयन ने मलयालम साहित्य में आधुनिकता की नींव रखी। आधुनिक मलयालम साहित्य में उनका योगदान ज़बरदस्त रहा है । ओटक्कुष़ल पुरस्कार(1970), केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (1990), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार (1990), वयलार पुरस्कार(1991), मुट्टत्तु वर्की पुरस्कार (1992), एष़ुत्तच्छन पुरस्कार (2001), संजयन पुरस्कार (2004), पद्मश्री आदि कई पुरस्कारों से वे विभूषित हुए थे। सन् 2003 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम से पद्मभूषण प्राप्त किया। उनके उपन्यास ये हैं-

1. खज़ाक्किन्टे इतिहासम् (1969)
2. धर्मपुराणम् (1985)
3 गुरुसागरम् (1987)
4. मधुरम गायति (1990)
5. प्रवाचकन्टे वष़ि (1992)
6. तलमुरकल (1997)

'गुरुसागरम्' को तीन पुरस्कार प्राप्त हुए - केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (1990), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार (1990) और वयलार पुरस्कार(1991)। और उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ ये हैं -

अरक्षितावस्था , विजयन्टे कथकल (1978), ओरु नीन्ट यात्रयुटे ओरम्मक्कायी (1979), कटल त्तीरत्तु (1988),काटु परञ्ञ कथा (1989), अशान्ति (1985), बालबोधिनी (1985), पूत प्रबंधवुम् मट्ट् कथकलुम् (1993), कुरे कथा बीजङ्ङल (1995), एन्टे प्रियप्पेट्ट कथकल आदि। समुद्रत्तिलेक्कु वष़ि तेटि वन्न परल मीन (1998) उनका संस्मरण है ।

ओ.वी. विजयन ने मलयालम साहित्य में कहानी एवं उपन्यास विधाओं में अपनी पहचान बनाई और मलयालम साहित्य में एक अद्वितीय इतिहासकार बन गए। आधुनिकता को एक सशक्त बुनियाद देकर विजयनजी ने इतने प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा, जो साहित्य जगत् के लिए एक नयी जाग्रति थी। अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने पाठकों को एक नई अनुभूति प्रदान की और मलयालम साहित्य भी एक अलग शैली अपनाकर नए आयामों को लिया । उनके अन्य उपन्यासों 'गुरुसागरम' , 'तलमुरकल', 'प्रवाचकन्टे वष़ि' आदि में भी व्यक्ति एवं समाज की व्यथा और मानव चेतना के आंदोलन हम देखते हैं।

जब 1975 में भारत में आपात् काल घोषित किया गया था तब अपनी रचनाओं एवं कार्यों द्वारा उन्होंने सधैर्य इसकी आलोचना की। 'इत्तिरि नेरंपोक्कु', 'इत्तिरि दर्शनम' आदि इसके प्रमाण हैं। उनके 'धर्मपुराणम्' उपन्यास में आपात् कालीन स्थिति को अधिक मार्मिक

दृष्टि से रेखांकित किया गया है। अपनी रचनाओं में अद्भुत बिंब एवं शैलियों को शामिल करने में वे अधिक ध्यान देते थे। उनके प्रत्येक उपन्यास का दृश्य-विधान अलग प्रकार का होता है। जब 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' में पालक्काटु के ग्रामीण दृश्यों को चित्रित किया गया तो 'धर्मपुराणम्' में इससे अलग एक परिदृश्य को निर्धारित किया गया।

उनका पहला उपन्यास 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' भारतीय भाषा साहित्य में एक अद्भुत एवं सर्वश्रेष्ठ क्लासिक उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास ने अगली पीढ़ी की रचनाओं को प्रभावित किया। सन् 1969 में प्रकाशित इस उपन्यास ने मौज़ूदा साहित्यिक कल्पना को एक नया रूप प्रदान किया। इसकी भाषा सामान्य भाषा से अलग थी, जिससे केरलीय लोग तब तक अनभिज्ञ थे। इस उपन्यास के द्वारा एक समृद्ध एवं प्रौढ़ उपन्यास भाषा का उदय हुआ। इस भाषा ने मलयालम की नई साहित्यिक पीढ़ी में एक नई भाषाई जागरूकता एवं शैली का निर्माण किया। इसका प्रभाव युवा पीढ़ी के लेखन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उस समय तक आदर्श नायक ही साहित्य दुनिया के मुख्य आधार थे। लेकिन 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' का नायक रवि इन सभी आदर्श गुणों को तोड़कर एक नकारात्मक नायक के रूप में हमारे सामने आया। सबसे पहले रवि को स्वीकार करने में साहित्य जगत् ने इनकार किया। उसने खज़ाक के खिलाफ़, रवि के खिलाफ़ और विजयन के खिलाफ़ तलवार उठा ली। लेकिन आगे पाठकों ने परिवर्तनों को महसूस किया और उनके मन में रवि ने अपना स्थान प्रतिष्ठित किया। उन्होंने 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' को बारबार पढ़ा, उस पर चर्चा की, आलोचना की और उसे शोध का विषय भी बना लिया। खज़ाक के दार्शनिक विचारों को नए आयाम दिए गए।

मलयालम साहित्य में परिवर्तन के ध्वज के रूप में 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' का उदय हुआ। इसकी छाया में नए लेखकों ने साहस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की नयी चमक पायी। इस प्रकार मलयालम उपन्यास जगत् दो श्रेणियों में विभाजित है- 'खज़ाक के पूर्व' और 'खज़ाक के बाद'। इस प्रकार नामकरण करके आलोचकों ने उसके महत्व को बढ़ा लिया। 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' उपन्यास में निहित विषय मनुष्य की अस्तित्ववादी पीड़ा एवं अपराधबोध है। 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' का रवि पाप से पाप की यात्रा के माध्यम से जीवन का अर्थ तलाशनेवाला एक खोजकर्ता है।

वास्तव में मलयालम साहित्य के विकास-क्रम में 'खज़ाक्किन्टे इतिहासम्' उपन्यास के द्वारा अद्वितीय योगदान दिये एक अभूतपूर्व रचनाकार हैं ओ.वी.विजयनजी। 30 मार्च 2005 को हैदराबाद में उनका निधन हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि अनुपम कथाकार ओ.वी.विजयनजी मात्र अपने पहले उपन्यास से ही अमर रहेंगे।

◆ शोध छात्रा
हिन्दी विभाग, महात्मागाँधी कॉलेज
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम
फोन-9495448129

मानव स्नेह के गायक पुतुशेरी रामचन्द्रन

♦ डॉ. पी.लता

स्वर्गीय पुतुशेरी रामचन्द्रन की ज़िन्दगी मलयालम भाषा केलिए समर्पित थी। सन् 2013 में मलयालम भाषा को 'क्लासिक भाषा' का पद उपलब्ध होने में तथा पाठ्यक्रम में मलयालम को पहली भाषा का स्थान प्राप्त करने में उन्होंने परिश्रम किया।

कवि के रूप में ही नहीं, भाषा इतिहासकार, अनुसन्धाता जैसे विविध रूपों में भी मलयालम को पुतुशेरीजी की देन अनुपम है। उनके नेतृत्व में 'द्रविड़ भाषा शिक्षा केन्द्र' से तैयार किया गया मलयालम भाषा का इतिहास ही मलयालम भाषा को 'श्रेष्ठ भाषा' का पद प्राप्त करने में मुख्य आधार बना।

पुतुशेरीजी के प्रयत्न से सन् 1977 में केरल विश्वविद्यालय द्वारा 'विश्व मलयालम सम्मेलन' का आयोजन किया गया। केन्द्र मंत्री मंडल में प्रवासी कार्य विभाग (विदेश कार्य मंत्रालय के अंतर्गत) का गठन इस सम्मेलन के फलस्वरूप शुरू हुआ। मलयालम में स्थल नाम पठन केलिए सन् 1983 में 'प्लान्स-प्लेस नेयिम सोसाइटी' (Plans - Place name society) का श्रीगणेश हुआ, जिसके अध्यक्ष रहे पुतुशेरीजी। 'स्थल नाम शिक्षा केन्द्र' के परिश्रम से 'ट्रिवान्ड्रम', 'कालिकट', 'कोयलोण' जैसे स्थल नाम क्रमशः 'तिरुवनन्तपुरम', 'कोषि़क्कोट्टु', 'कोल्लम' के रूपों में बदले।

'कण्णश रामायणम्' काव्य भाषा पर सर्वप्रथम शोध-कार्य पुतुशेरीजी ने किया। द्राविड़ साहित्य शाखा में रुचि और द्राविड़ साहित्य संगठन का गठन उनके इस शोध के परिणाम हैं। 'कण्णश रामायणत्तिन्टे विवरणात्मक पठनम्' (कण्णश रामायण का विवरणात्मक अध्ययन) नामक उनका शोध प्रबंध बाद में 'लैंग्वेजस ऑफ मिड़िल मलयालम' नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। उसमें शोध प्रबंध का अंतिम भाग नहीं छपा था। इस भाग 'डिस्क्रिप्टीव ग्रामर ऑफ कण्णश रामयाणं' की छपाई उनके दिवंगत होने के दिन दुपहर को प्रेस में पूरी हुई। प्रकाशक है- इंटरनाशनल स्कूल ऑफ द्रवीडियन लिंग्विस्टिक्स। पुतुशेरीजी ने निरीक्षण किया कि 'कण्णश रामायणं' (मलयालम का संपूर्ण रामायण काव्य) 'भाषा पोषिणी' (प्रकाशक - भाषाभिमानी तथा क्रांतदर्शी कण्टत्तिल वर्गीस माप्पिला) के प्रारंभिक अंकों में धारावाहिक छपा गया था। केरल संस्कृति को रूपायित करने में जैन-बौद्ध धर्मों के स्थानों पर लिखे उनके 'प्राचीन मलयालम', 'केरल चरित्रत्तिन्टे आटिस्थान रेखकल' (केरल के इतिहास की मूल रेखाएँ) आदि ग्रंथ पुरस्कृत हुए।

दक्षिण भारतीय भाषाएँ एक ही भाषा परिवार की भाषाएँ हैं तथा संस्कृत से इन भाषाओं का संबंध नहीं है - यह मत सर्वप्रथम प्रकट किया था 'फ्रान्सिस वेट एल्लिस' (अंग्रेज़) ने। उनके शोध प्रबंध के आधार पर पुतुशेरीजी ने 'एफ.डब्लियू एल्लिस ऑन मलयालम

लैंग्वेज' नामक पुस्तक तैयार किया जो भाषाशास्त्र की संपदा बनी। इस ग्रंथ के द्वारा केरल के भाषा अनुसन्धाताओं का ध्यान द्रविड़ भाषा परिवार सिद्धांत के उपज्ञाता 'एल्लिस' पर गया।

सन् 1986 में 'केरलपाणिनीयम्' प्रकाशित हुआ तो उस पर जो विमर्श हुए पुतुशेरी ने उन्हें संकलित करके 'केरलपाणिनीयम् एन्न मलयालम व्याकरणवुम् विमर्शनङ्ङलम्' (केरलपाणिनीयम् नामक मलयालम व्याकरण और विमर्श) नामक ग्रंथ तैयार किया।

पुतुशेरीजी ऐसे साहसी कवि थे कि वे अपने मत धीरता से प्रकट करते थे। चीन की स्वतंत्रता की घोषणा पर अभिवादन स्वरूप उन्होंने कविता लिखी। 'टियाननमेन स्क्वयर हत्याकांड' हुआ तो इसके खिलाफ़ 'मूङ्ङयुम् पाणनारुम्' नामक कविता लिखी। कोल्लम जिले में मज़दूरों पर पुलिस ने गोली चलायी तो उन्होंने लिखा -"ती पेय्यरुते मष़मुकिले' (आग न बरसे इन्द्रधनुष)।

समाज के पिछड़ों तथा शोषित स्त्रियों केलिए उन्होंने कविताएँ लिखीं। तेरुविले पेङ्ङल (गली की बहन), पावक्कूत्तु (पुतली नाच), आश्रमत्तिन्टे कण्णुनीर (आश्रम के आँसू) आदि उदाहरण हैं।

काम्पिशेरी करुणाकरन के स्वामित्व में निकली 'भारतत्तोष़िलाळी' नामक हस्तलिखित पत्रिका में पुतुशेरीजी की सर्वप्रथम कविता प्रकाशित हुई। फिर 'आज़ाद', 'युव केरलम्', 'जनयुगम्' और 'कौमुदी' साप्ताहिकों में कविताएँ सतत् छपी जाती थीं। उनके 10 कविता संग्रहों में 300 से अधिक कविताएँ प्रकाशित हुईं। उनका 'अग्नये स्वाहा' कविता संकलन बहुचर्चित हुआ। उन्होंने अफ्रीकी तथा रूसी कविताओं के अनुवाद भी किये।

कवि पुतुशेरीजी ने सन् 1940 के समय अपनी 'पुतिय कोल्लनुं पुतियोरालयुं' (नया लुहार और नया ओसारा) कविता के साथ प्रकट होकर स्वतंत्रता-संग्राम से ऊर्जा ग्रहणकर विप्लव कविताएँ लिखीं। बाद में भावात्मक और काल्पनिक वैयक्तिकानुभूति-तल से उनकी कविताधारा आगे बढ़ी और 'उत्सव बलि' नामक चर्चित कविता तक पहुँच गयी। शिला शासन आदि प्राचीन ऐतिहासिक बातों पर उनके अनुसन्धान मुख्य हैं। उन्होंने हज़ार वर्ष पुरानी तमिल मिश्रित मलयालम भाषा के शासनों को वर्तमान भाषा में लिपिबद्ध किया। प्राचीन मलयालम से आधुनिक मलयालम तक उनके सवार ने मलयालम को 'क्लासिक पद' उपलब्ध कराया। वे विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकवृत्ति से सेवानिवृत्त होकर अनन्तर तीस साल मलयालम भाषा और लिपि पर शोधकार्य में व्यस्त रहे। उन्होंने खुद कहा कि निश्चित उद्देश्य के बिना एक पंक्ति भी नहीं लिखी है। उन्होंने अपनी काव्य पंक्तियों द्वारा समाज को जगाना चाहा। उनकी कविताओं में मिट्टी और मनुष्य से असीम स्नेह प्रकट होता था। वे वयलार, पी.भास्करन, ओ.एन.वी.कुरुप, तिरुनेल्लूर करुणाकरन जैसे कवियों की श्रेणी के थे, जो प्रगतिवादी थे तथा हमेशा सिर उठाकर चलते थे। पुतुशेरीजी की विप्लव कविताओं में उनका 'समत्व दर्शन' दर्शनीय होता था। अपने मामा तथा कम्युनिस्ट नेता पुतुप्पल्ली राघवन का प्रभाव उन पर था। उन्होंने 'पुतिय कोल्लनुम् पुतिल आलयुम्'

(1960), 'शक्ति पूजा' (1965), 'अकलुं तोरुं' (1970), 'अग्नये स्वाहा' (1988) जैसे कविता संग्रहों से अपने राष्ट्रीय और सामाजिक दर्शन प्रकट किये।

केरल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पद के अलावा पुतुशेरी रामचन्द्रनजी ने और भी कई पद अलंकृत किये। वे टेक्सास, मोस्को, लेनिन ग्राड़ आदि विश्वविद्यालयों में विसिटिंग प्रोफेसर रहे थे। केरल विश्वविद्यालय में सेनेट मेम्बेर, सिंटिकेट मेम्बेर, बोर्ड ऑफ स्टडीस चेयरमेन जैसे पद अलंकृत किये। वे 'साहित्य प्रवर्तक सहकारी संघ' के निदेशक, 'द्रवीड़ियन लिंग्विस्टिक असोसिएशन' के स्थापक निदेशक, 'यूनिवर्सिटी टीचर्स फेडरेशन' के स्थापकाध्यक्ष आदि भी रहे।

पुतुशेरीजी एषुत्तच्छन पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी की विशेष सदस्यता, केन्द्र साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार, वल्लत्तोल पुरस्कार, आशान पुरस्कार, उल्लूर पुरस्कार, मुलूर पुरस्कार, पी. कुञ्ञिरामन नायर पुरस्कार, आकाशवाणी राष्ट्रीय पुरस्कार आदि कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हुए। राजनीति में रुचि रखनेवाले पुतुशेरी रामचन्द्रन जी कांग्रेस संगठन के अध्यक्ष रहे थे। वे छात्र जीवन के दौरान स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेकर जेल गये थे।

सन् 1948 में स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिये सारे कैदी जेल से मुक्त हुए और मात्र पुन्नप्र वयलार संग्राम के कैदी मुक्त नहीं हुए तो इसके खिलाफ़ तोप्पिल भासी, काम्पिशेरी करुणाकरन और पुतुशेरी रामचन्द्रन कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गये। पुतुशेरीजी कम्युनिस्ट होने के बाद पुतुप्पल्ली राघवन, तोप्पिल भासी, काम्पिशेरी करुणाकरन आदि के साथ पार्टी के कार्यों में सक्रिय रहे। सन् 1947 में तिरुवनन्तपुरम में पुलिस की गोली से एक छात्र मारा गया तो उसके खिलाफ़ भरणिक्कावु स्कूल में आयोजित जत्थे में उन्होंने भाग लिया। उन्होंने 14 अगस्त 1947 में आधी रात को भरणिक्कावु स्कूल के आँगन में राष्ट्रीय झंड़ा फहराया।

'श्रीनारायण कॉलेज, कोल्लम' में छात्र संघ रूपायित किया और छात्र-संग्राम को नेतृत्व दिया तो उन्हें श्री.ओ.माधवन के साथ कठिन जेल दण्ड भोगना पड़ा। अपने अनुभवों पर पुतुशेरी द्वारा लिखी गयी 'एन्टे स्वातंत्र्य समर कवितकल' (मेरी स्वतंत्रता संग्राम कविताएँ) सन् 1948 में प्रकाशित कविता संकलन है।

कवि, अनुसन्धाता, राजनीतिज्ञ, भाषा इतिहासकार जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री पुतुशेरी रामचन्द्रन 14 मार्च 2020 को स्वर्गस्थ हुए। 23 सितंबर 1928 को मावेलिक्करा के वल्लिक्कुन्नु गाँव में पोक्कोट्टु दामोदरन पिल्लै और कोयित्तरा जानकी अम्मा के बेटे के रूप में उनका (पुतुशेरी राचन्द्रन पिल्लै का) जन्म हुआ था। उनकी आत्मकथा है 'तिलच्च मण्णिल काल नटयायी' (जलती मिट्टी में पैदल चलते; 2017)। स्वर्गीय पुतुशेरी रामचन्द्रन जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ.पी.लता, आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम -14 द्वारा अबी प्रकाशन एन्ड प्री-प्रेस, करुमम्, तिरुवनन्तपुरम -2 में मुद्रित तथा डॉ.पी.लता द्वारा संपादित
Printed & Published by Dr.P.Letha, Arathi, T.C. 14/1592, Forest Office Lane, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram -14,
Printed at Abi Design & Pre-Press, Karumom, Thiruvananthapuram -2 & Edited by Dr. P. Letha